

गोपाल झा 'अभिषेक'

माता : स्व. पवित्री देवी
पिता : स्व. बामदेव झा
जन्म : 15 अप्रैल 1966 ई०
जन्मस्थान : मुरलियाचक, प्रखण्ड-बिस्फी, मधुबनी।
शिक्षा : एम०ए०(इतिहास)

प्रकाशन : 1. एक आदिम गंध की तलाश (हिन्दी कविता-संग्रह-2011 ई०)
2. कइएक अर्थमे (मैथिली कविता-संग्रह-2017 ई०)
'मुक्तिपर्व' 'रूपनगर' आ 'एकटा आर अग्नि परीक्षा' अप्रकाशित मैथिली नाट्यकृति।

सम्मान तथा पुरस्कार :

'मुक्तिपर्व' पर अरिपन द्वारा तृतीय अंतर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह(1986)क नाट्य लेखन प्रतियोगितामे द्वितीय पुरस्कार प्राप्त। भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर(बिहार) द्वारा आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान(2018) एवं विभिन्न साहित्यिक संस्था द्वारा सम्मानित।

सम्पर्क :

उगना कॅालोनी, सप्ता मधुबनी(मिथिला) बिहार- 847214
दूरभाष : +91 91220 19246
ई-मेल : gopaljha1504@gmail.com

आउ स्वप्न साझी करी

गोपाल झा 'अभिषेक'



अनुप्रास प्रकाशन
मधुबनी

अनुप्रास पेपरबैक्स
ISBN : 978-81-949943-6-7



आउ स्वप्न साझी करी

पहिल संस्करण : 2021
मूल्य : ₹ 200/-

प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन
कार्यालय : इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी (मिथिला) बिहार 847 211
वेबसाइट : www.anuprasprakashan.com
ईमेल : info@anuprasprakashan.com
anuprasprakashan@gmail.com
मोबाइल : +91 8862977228

आवरण : अनुप्रास स्टूडियो
थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

AAU SWAPN SAJHI KARI
A Collection of Maithili Poems by
GOPAL JHA 'ABHISHEK'
Published by
ANUPRAS PRAKASHAN
First Edition : 2021
Price : ₹ 200/-

‘लाख प्रश्न अनुत्तरित’ ठाढ़ कएनिहार
स्व. रामलोचन ठाकुरकेँ...

आदर समर्पित।

लक्ष्य धरि पहुँच'बैत अछि कविता

कविताक संबंधमे फैलसँ विचार करैत हम मानैत छी जे— "कविता ओ लयात्मक भावाभिव्यक्ति थिक जे कल्पना ओ सौंदर्यक अवलम्बन कए सार्थक बनि प्रस्तुत होइछ।"

कविता पाठककें संवेदनशील बनबैत अछि जाहिसँ मनुखताइकें बचा रखबामे आ ओकर आओर अधिक विकासमे सहयोग भेटैत छै। सभ्यता आ संस्कृतिक हेतु मनुखताइ घरक बिचला खाम्ह सन महत्वपूर्ण अछि। अस्तु, कविता मानव जीवनक अनिवार्य अंग बनि जाइत अछि जे अत्यंत सहज आ स्वाभाविके कहल जाएत।

मिथिलाक समाज, संस्कृति आ भाषाक वर्तमान समस्या मैथिली कवितामे प्रमुख रूपें पाओल जाइछ। निश्चित रूपें कविताकें से चिंतन करबाके चाही। मुदा, ताहि संगहि बसुधैब कुटुंबकमकें मानैत विश्वक अधिकांश चिंता, समस्या आ विडम्बना मैथिली कवितामे खूब प्रमुखतासँ जगह पाबि रहल अछि। अपन प्रकृति, प्रवृत्ति, कथ्य आदि विभिन्न उपादानक संग मैथिली कविता एखन विश्व-कविताक संग डेग सँ डेग मिला चलि रहल अछि। जाहि कविगणक बलेँ हमरा लोकनि मैथिली कविताक प्रसंग एहन दाबी करैत छी ताहिमे एकटा कवि श्री गोपाल झा 'अभिषेक' जी सेहो छथि। ई हिंदी कविता-संग्रह 'एक आदिम गंध की तलाश'(2011) आ मैथिली कवितासंग्रह 'कइएक अर्थ मे' (2017)क बाद प्रस्तुत संग्रह 'आउ स्वप्न साझी करी' लऽ उपस्थित भेल छथि। हिनक कविता सभ बेस प्रशंसित होइत रहलनि अछि। ओना ई तीन गोट मैथिली नाटकक यशस्वी रचनाकार सेहो छथि।

अभिषेक जीक कविता सभ पाठककें संवेदनशील बनबैत

अछि। अपन सहज प्रस्तुति आ सरल शब्दक संग कविता सभ कथ्यकें पाठक धरि सुगमतासँ पहुँचेबामे पूर्ण सक्षम अछि। अपन सहज प्रवाह आ प्रचलित शब्द विन्यासमे कविता पाठककें चिंतन पर बाध्य करैत अछि। आ ई सभटा मिलि कविताकें सफल बनबैत अपन लक्ष्य धरि पहुँचबैत अछि।

प्रस्तुत संग्रहक हिनक कविता सभमे बहुत रास समकालीन विषय सभ उठाओल गेल अछि। कविता अपन कथ्यसँ पाठककें सहजहि जोड़ि लैत अछि। पाठक कविक चिंतनसँ एकाकार भऽ जाइ छथि। आ एहि तरहें हिनक कविता अपन काज सरलतासँ कऽ लैत अछि।

हमरा लोकनि प्राचीने कालसँ विश्व - कल्याणक कामना करैत रहल छी। एखन तऽ आर तकनीकी विकासक चलते संसार लगातार छोट भऽ रहल अछि। पिरथीक कोनो कोन्हक कोनो घटना समस्त विश्वकें प्रभावित करैत अछि। साहित्यकार तऽ आओरो बेसी आ से छोटसँ छोट बातकें गम्हीर भऽ अकानैत छथि। विश्वक युवा नेत्री सभमेसँ एक न्यूजीलैंडक प्रधानमंत्री जेसिंडा अर्डर्न अपन प्रगतिशील विचार तथा विश्वशांतिक प्रबल पक्षधर रहबाक कारणे संसार भरिक युवाक आश-भरोस छथि। कवि 'अन्तिम आस' कविता हुनका समर्पित करैत कहैत छथि—

'जखन-जखन खगता भेल
ललाइत रहलौं करुणा लेल
अहाँक उपस्थिति देखने छी हे नारी !
अन्तिम आस जँ जोगेलिऐ
अकारण तऽ नहिये'

समस्त साहित्यकार आ कलाकार शांतिपूर्ण विकासक कामना करैत रहल छथि। कोनो तरहक परिवर्तन बिना कोनो हिंसाक हुए, सएह सभ्य समाजक निशानी कहल जा सकैए। असलमे हिंसा पशुताक प्रमाण थिक। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व केर भावना मानव

सभ्यताकें उत्कर्ष पर पहुँचा सकैत अछि। कवि एहि बातकें नीक जकाँ गमैत छथि। ई अहिंसक परिवर्तनक प्रबल पक्षधर छथि। हिनक 'अनुष्ठान' शीर्षक कविता देखल जा सकैछ —

'कतहु नहि खसौ
रक्तक एकोटा बून्न
आ नीके - नीक
भ' जाउक सभटा नीक परिवर्तन
एहने दिनक प्रतीक्षा अछि बंधु'

कवि 'पीठ देखाबऽ वलाक सम्मानमे' सेहो ठाढ़ छथि जाहिसँ हुनका हीनताबोध नहि होइन। ठीके, एत्ते दूर धरि कोनो कविये सोचि सकै छथि आ ई सोच मनुखताइकें जोगेबाक लेल अछि, ककरो उपहास कऽ मानसिक क्लेश देबाक लेल नहि। क्लेश तऽ बहुतो तरहक अछि। वैश्वीकरणक उजाहिमे जेना लोकक दूरी बढ़ल अछि से भविष्य आ सभ्यताक लेल नीक संकेत नहि अछि। आ से वर्तमानमे एहि दूरीकें मेटएबाक चेष्टा नहि भेल तऽ सभ्यता अधोमुखी हेबाक संभावना प्रबल अछि। कवि तैं 'जोड़ऽकैं काज जड़िसँ हेतै' शीर्षक कवितामे कहै छथि —

'जोड़ऽकैं काज जड़िसँ हेतै
तोड़ऽकैं काज बरू होइत रहओ उपरसँ'

दैनिक जीवनक छोट सँ छोट बात आ घटनाकें कवि नीक जकाँ अकानैत छथि आ ताहि प्रसंग कविता लिखैत छथि। एहन कइएक गोट कविता अछि जकरा पढ़ि पाठकक मन बदलि जेतनि। जाहि चरित्र आ परिस्थितिसँ ओ अकच्छ रहैत छथि कविता सभ पढ़लाक बाद तकरा प्रति संवेदना जागि जेतनि। एहने एकटा कविता अछि 'उपरौंझ'। एहिमे टेंपू वला सभक परिस्थिति आ नचारी एहि ढंगे प्रस्तुत भेल अछि जे पाठकक मनमे सहानुभूति सहजें जागि जाइत अछि—

'ठाढ़ नहि होबऽ देतैक एतऽ बेसी देर
सटका लेने डरबैत ट्रैफिक पुलिस
ओहो सब अकच्छ तऽ रहिते छैक
एकर सभक उपरौंझ सँ'

नीक काज केनिहारक बाटमे बाधा अदौसँ अबैत रहल अछि आ से कखनो कऽ तऽ बाधाक जीत सेहो भऽ जाइत छै (दोसर स्वर्गक योजना)। तैयो नीक काज केनिहारक कमी कहियो नै रहलैए आ एखनो नै छै। ओना, इतिहासमे कएल गलतीकेँ सकारबाक आवश्यकता छै, ताहिसँ सिखबाक बेगरता छै (इतिहासक इजोतमे)। बेगरता सपना देखबाक आ देखैत रहबाक सेहो छै। जाबत धरि सपना अछि ताबत धरि नीक भविष्यक भरोस अछि आ ताबत धरि कविता सेहो अछि। एकटा एहनो समय आएल छल जहिया कविताक सार्थकता पर प्रश्न उठाओल गेल रहय। कविताकें मरणासन्न पर्यंत कहल गेल। मुदा कविता ने मात्र जीबैत रहल, अपितु प्रतिरोधक दृढ़ स्वर बनल। ई सब बात कवि 'वैह स्वप्न तँ अछि कविता' मे जखन कहैत छथि तऽ पाश मन पड़ैत छथि। सरिपहुँ, कविता एकटा सपना अछि नीक समाजक निर्माण करबाक। नीक समाजक निर्माणमे नारिक भूमिका अदौसँ रहल अछि। नारी अपना मादें नै, अपन परिवार, समाज आ समस्त संसारक कल्याणक मादें सोचैत छथि आ ताही निमित्त अपना जीवनकें उसरगि दै छथि। किन्तु संसार भरिमे नीति - निर्माणमे नारिक भागीदारी उचित स्तर पर एखनो नहि अछि। अस्तु, कवि उचिते आह्वान करैत छथि जे कोनो निर्णयक घड़ी नारिक विचार जानल जाए, हुनकासँ पूछल जाए आ ई क्रम सदति बनल रहय (एक बेर पूछि तऽ लिऔ)। कवि विश्व भरिमे न्याय ओ शांतिक लेल एकरा आवश्यक बुझै छथि।

मिथिला नदी मातृक देश कहबैत अछि। मिथिलाक माटि नदियेसँ सोन भेल अछि। एहिठामक संस्कृतिमे नदी अत्यंत महत्वपूर्ण अछि। धारक कातमे गाम आ नगर बसैत रहल अछि। किछु धार विभिन्न भौगिलिक कारणे अलोपित भऽ जाइत अछि। एहन धारक

पूर्व प्रवाह क्षेत्र छाड़न कहबैत अछि। धारक पोषक रूप आ छाड़नकें विषय बना 'धार बसबैत रहलए गाम' नीक कविता कएल गेल अछि। कविक उद्गार मनन करबा जोगर छनि—

'उजाड़ब नहि रहलैक कहिओसँ
धारक प्रवृत्ति
धार तँ बसबैत रहलए गाम
आ बसा विदा होइत रहलए
बसाबऽ लेल कोनो दोसर गाम'

प्रेम नैसर्गिक होइत अछि। प्रेमक बिना जिनगी अपूर्ण अछि आ से गृहस्थक जिनगी होइ आकि साधुक। गृहस्थक जिनगीमे पति-पत्नीक प्रेमकें कवि बहुत कम शब्दें एकदम स्वाभाविक रूपें बहुत नीक चित्रण केलनि अछि। 'ताहि बीच' शीर्षक कवितामे जखन ई कहैत छथि—

'होइत रहल कहा-सुन्नी, रूसा-फुल्ली
राग उपराग सब

आवश्यकते भरि कएल भेल
आवश्यकते भरि भेटबो कएल
ताहि बीच
प्रेम'

तऽ जेना समस्त गृहस्थ जीवनक प्रेम एहि पंक्तिमे हुलकी देबय लगैत अछि। हिनक अनुभूति समष्टिक अनुभूति भऽ जाइत अछि। ओना प्रेमक विविध रूप अछि। आ से कोनो विशेष तरहक प्रेम कइएक प्रकारक अवरोध सेहो ठाढ़ कऽ दैत अछि (प्रेम संग)। एहि ठाम कवि मनुखताइअक विरुद्ध प्रेमसँ एक तरहें सावधान करैत छथि।

मानव बाधासँ लड़ैत रहल अछि, विजयी होइत रहल अछि

तथा आगाँ बढ़ैत रहल अछि। मार्गमे ठाढ़ अवरोधक चिंता मनुष्य कहियो नहि केलक। ओ तऽ बाधाकें एकटा चुनौती आकि परीक्षाक रूपमे स्वीकार केलक आ अपन लक्ष्य धरि चलैत रहल। सत्य तऽ ई अछि जे बाटक अवरोध मानवकें आर मजगूत केलक, ओकर आत्मबल बढ़लै आ ओ आओर कठिन लक्ष्य निर्धारित करैत रहल। माने, अवरोध एकटा संभावना सेहो रहल अछि। ई अवरोध जीवनमे विभिन्न तरहें अबैत अछि। कवि 'पहाड़ : एकटा संभावना' शीर्षक कवितामे बड़ कम शब्दमे बहुत सुन्दर ढंगें एहि बातकें कहैत छथि—

'पहाड़
एकटा अवरोध
एकटा विरोध

एकटा स्थापित प्रतिपक्षी
जन्मजात विपक्षी

तखने तँ एकटा संभावना अछि
पहाड़ एखनो'

साहित्यक काज समाजक अएना बनबसँ अधिक समाजकेँ उचित मार्ग देखाएब अछि। अपन ई मूल काज साहित्य सभ दिनसँ करैत आबि रहल अछि, एखनो कऽ रहल अछि। आ से प्रस्तुत संग्रह तकरा प्रति आओरो आश्वस्त करैत अछि। संग्रहक कविता सभ सामान्यसँ विशिष्ट पाठक धरिक लेल समान रूपें पठनीय अछि। आधुनिक कविता पर पाठकसँ दूर रहबाक आरोपकें हिनक कविता सभ खारिज करैत अछि। हमर विश्वास अकारण नहि अछि जे पाठक हिनक एहि कविता संग्रहक सेहो स्वागत करताह। कविकेँ अशेष बधाइ ओ शुभकामना।

— मिथिलेश कुमार झा

अनुक्रम

लक्ष्य धरि पहुँच'बैत अछि कविता 07

कविता

सभटा आरोपक कठघरामे
हमही छी ठाढ़
नहि जाएब ना-सकार
सभटा अछि स्वीकार।

प्रेमदिप्त नजरिसँ देखै छी
इतिहासक सत्यकेँ
आ बेकछबैत छी
अपन एक-एकटा गलती।

अंतिम आस

[जेसिंडा अर्डर्नक लेल...]

माए ! अंतिम आस जँ पोसलियै
से अकारण तँ नहिए।

कहिआ नहि तकलियै अहाँ हमर मुँह दिस ?
चिन्ताक एकोटा रेघ जँ देखाएल
भ' गेलहुँ अहाँ अपसिआँत
हँसोथि देलहुँ माथ
माए ! अंतिम आस जँ पोसलियै
से अकारण तँ नहिए।

जखन बहलै नाक, पोछि देलियै
ओझरेलै झोंट, ल' कंघी सोंटि देलियै
जखन कखनो हम उठा अस्त्र
दौड़लहुँ करबा लेल कतहु ध्वंस
पकड़ि लेलियैक अहाँ बाँहि
बहिन ! अंतिम आस जँ रखलियै
से अकारण तँ नहिए।

जखन-जखन खगता भेल
ललाइत रहलहुँ करुणा लेल
अहाँक उपस्थिति देखने छी हे नारी !
अंतिम आस जँ जोगेलियै
से अकारण तँ नहिए।

कोना परतारब हे तथागत

[साल-दर-साल चमकी बोखारक बलि चढ़ैत शताधिक नेना सभक स्मृति-तर्पणमे...]

ओ एकटा माए छलीह
जकरा एक मुट्ठी सरिसोक बहन्ने
अहाँ यथार्थबोध करयबामे
सक्षम भ' गेल रही हे तथागत !
मुदा ओ तँ सांत्वना देएबाक
एकटा बहन्ने छल ने हे अमिताभ !
सभ घरमे आगाँ ने पाछाँ भेल
मृत्युक अनुभूतिक
भने संतोष क' लेने हो ओ माए
मुदा ओहो तँ भरमयबाक
एकटा युक्तिए छलै ने हे युग-पुरुष !

ओहि शोक-संतप्त माएकेँ
छलैक अहाँसँ चमत्कारक उमेद
छलैक विश्वास
अहाँक ईश्वरत्त्व अवस्से जिआ देतैक
ओकर बच्चाकेँ
मुदा अहाँ जनैत छलहुँ हे ज्ञानाधार !
मृत्युक आगू काज नहि करैत छैक कोनो चमत्कार
कोनो नेनाकेँ काल-कलवित होएबासँ बचेबा लेल
होइत छैक चिकित्सकीय अनुसंधान
आ यथोचित संसाधनक दरकार।

छोड़ि देने रही अहाँ तहिआ एहि प्रश्नकेँ
जक-थक
विश्वास रहल होएत
भविष्यक मनुष्य अवस्से अपन कर्मठता
आ उद्योगसँ
निकालि लेत एकर समाधान।

ओहि माएकेँ त'
अहाँ परतारि देने रहियैक हे महाश्रमण !
मुदा आजुक शताधिक माएकेँ
कोना परिबोधब हे करूणासागर ?
जकर सभक क्रंदनसँ
अहूँ विचलित भ' गेल होएब आइ।

हे महाबोधिसत्त्व !
तत्क्षण समुचित समाधान नहि निकलबाक कारणें
की अभिशापित भ' गेल अछि ई जन-क्षेत्र ?
बेबस अछि अधुनातन व्यवस्था ?
आन्हर भ' गेल अछि अनुसंधान प्रवृत्ति ?
असमर्थ छथि आधुनिक जीवन-दाता ?
पंगु भ' चुप्पी साधि लेने छथि नीति-नियंता ?

हे मृत्युंजय !
आब यथार्थक दिग्दर्शन नहि
करुणाक वर्षण चाही
महावर्षण
अहूँक नेत्र-द्वयक कोरमे नोर चाही दयासागर !
नोरक अजस्रधार
यैह मात्र बचा सकत
हमर सभक भविष्यकेँ।

ट्रान्सफर्मर

चालक-कुचालकक बैसा सामंजस्य
बैसाओल गेलए ट्रान्सफर्मर
अभेद्य देबाल बनि ठाढ़ भ' गेलए
अवांछित प्रवाहक विरूद्ध
चिनमाटिक बनल तुच्छ सन वस्तु-जात सभ
अपन स्वभाविक प्रकृतिक कारणेँ
बनि गेलए अपरिहार्य
सुचालकताकेँ बनौलकए असान
भरि बस्ती भ' रहलए इजोत।

दिन-राति प्रवाहित क' रहलए उर्जा
ट्रान्सफर्मर
अगल-बगलक लोक
साधारण सन कुचालक वस्तु सभक कारणेँ
क' रहलए अपनाकेँ सुरक्षित अनुभव
महत्त्वहीन ई वस्तु सभ
अपन स्वाभाविक गुणक कारणेँ
रोकि रखने अछि अवांछित प्रवाहकेँ।

सुचालक-कुचालकक संतुलित समन्वयसँ
ठाढ़ भ' रहलए उर्जान्वित भ' समाज।

अनुष्ठान

कतहु नहि खसौ
रक्तक एकोटा बून्न
आ नीके-नीक
भ' जाउक सभटा नीक परिवर्तन
एहने दिनक प्रतीक्षा अछि बन्धु !

एहने समयकेँ स्वागत लेल
उताहुल अछि मोन
सुनू मीत ! अकानि—
एहने सन परिस्थिति लेल
कतेको आत्मा
ठनने अछि अनुष्ठान।

जेरुसलम

कत' होयबाक चाही जेरुसलमकेँ ?
केम्हर होयबाक चाही जेरुसलमकेँ ?
ककर होयबाक चाही जेरुसलम ?

एहि सभ प्रश्नक फेरमे जँ नहि पड़ी
सभक कही
सभक हक लेल लड़ी
तँ जेरुसलक होयबाक सुख पाबि सकैत छी
जेरुसलम होयबाक दु:ख बर्दास्त क' ली
तखन।

पीठ देखाब'वलाकेँ सम्मानमे

आँखि जँ नहिओ ओछौने रही
मुदा रही जँ ठाढ़
तँ चौँकि नहि उठब अहाँ मीता !
नीक लगैए सम्मान दैत।

ओहि जगह हमही रहितहुँ
तँ की चाहितहुँ—
करए किओ असम्मान ?

सम्मान तँ
अपनहिमे रहलए प्रश्नांकित
विस्मयादिबोधक चेन्ह तर कछमछाइत
कतेक की पापड़ बेलबाक परिणति होइत अछि सम्मान
सत्य पूछी तँ एकटा रणनीति सेहो होइत अछि।

नहि सोझा राखब कोनो उदाहरण
नहि कहब उनटाब' इतिहासक पन्ना
नहि कहब करु अभ्यास
देखबाक लेल सभमे
एकहि देवत्त्वक आधान।

घुरि अएबाक पैरोकारक रूपमे
नहिए करी जँ अपनाकँ ठाढ़
तखनो आँखिमे नहि भेटए हीनताक कोनो भाव
तँ व्यंग्यसँ अहाँ मुसकिया नहि उठी मीता !

छिटकल बिजुलोका हमरे अछि

इजोरिए नहि
अन्हरिओ हमरे अछि
छिटकल बिजुलोका हमरे अछि
मुकरि कोना जएबैक ?
करबै कोना नहि अंगीकार ?
सम्हार' पड़त सभकेँ
मूल रूपेँ स्वीकार' पड़त सभ किछु।

वसन्तक स्वागत अवश्य हेतैक
मुदा ताहिसँ पहिने आबि गेलैक पतझाड़
नहि मना क' पौलियैक
मनो कएने की मानैत ?
जाहि गाछ-बिरिछपर अएलैक
जाहि हवामे सन्हिएलैक
ओहो त' स्वागते कएलकैक।

तखन कोना गएबैक मात्र वसंत-महिमा ?
पतझाड़क सेहो छैक अपन गरिमा।

इजोतक गप

इजोतक गप करब
तँ इजोतेटाकेँ गप करब
बहुतो दिन धरि रोकि कोना राखल गेल
से प्रसंग तँ अनायासे चलि आओत
बस्स ! सायास रोकबाक प्रयास
आब नहि कएल जाए मीत !

इजोतसँ बड्ड फायदा छैक
सभक फायदा
बहुजन हिताय
कोना एकटा सड़ल विचार खोपड़ीमे सन्हिआ गेल रहए
सभतरि इजोत पसरने
कोना चलतैक काज ?
के चिचिआएत ?
'तमसो मा ज्योतिर्गमय'
के जयकारा लगाओत ?
के विनयावत् समक्ष होएत ठाढ़ ?

अपरोजक मिथ्याकांक्षा मोनमे बसि गेल रहए
सत्य पूछी तँ दुर्भाग्यरूपी नाग डसि लेने रहए
भोगलहुँ से भोग

आर कते भोगब ?
मिथ्या बड़प्पनकेँ
आर कते जोगब ?

धैर्य तँ चाहबे करी मीत !
सभतरिसँ घुरि-फिरि पहुँचल छी एतए
सभक ने देसकोस
सभक लेल ने जनतंत्र।

बड़ीटा छैक दुनिया
कमएबा-खएबा लेल
हँ, छोट पड़ि जाइत रहलैए
बैसले-बैसल तर माल उड़यबाक लेल
से एखनो भ' रहलए ठेलम-ठेल
तँ इजोतोकेँ बना झुनझुना
बजा-बजा लोभा रहलैए मदारी।

दोसरे दिन जकाँ

[प्रियंका रेड्डीक स्मृति-तर्पणमे...]

दोसरे दिन जकाँ
निकलल हेतैक ओहो दिन घरसँ
पाछाँसँ नहिए छिकने हेतैक किओ
नहि अगेसँ बिलाइ कटने हेतैक रस्ता
हड़बड़ाएल निकलल हेतैक घरसँ ओ
संभव ओहो दिन बिसरल जाइत हो टिफिन
माए ल' आबि ठाढ़ भ' गेल हेतैक आगाँ
जाबति ओ निकालने होएत स्कूटी
छोटकी बहिन दौड़ल चलि आएल हेतैक
देबाक लेल हेलमेट
अनमन दोसरे दिन जकाँ त'
सभ किछु भेल हेतैक ओहो दिन।

तखन ओहि दिन
किएक भेलैक अप्रत्याशित ?
किएक भेलैक दुखद विशेष ?
भेड़िया सभक चाँछपर कोना चढ़ि गेलै ?
'मादा-मासु-आस्वादी'
लार टपकबैत कोना जुटि गेलैक ?
शिकार फाँसबाक अभ्यस्त मस्तिष्क
बूनि लेलकैक तत्क्षण जाल

शिकार बझेबाक कौशल
बना देने रहैक चतुर-चण्डाल
ओहि दिन अवसर भेटि गेलैक
विशेष एतबे भेलैक।

विश्वास-अविश्वासक बीच
असहाय भेलि झूलि गेलैक
मनुखताइ किछु आरो
लज्जित भेलैक
ओहि दिन
एतबे भेलैक।

जोड़ 'कँ काज जड़िसँ हेतै

जोड 'कँ काज जड़िसँ हेतै
तोड 'कँ काज बरू होइत रहओ उपरसँ

राजनीति-सुआदी
फसादी
अपने उकन्न भ' जएतैक
कोनो शर्त नहि मंजूर
जोड़ 'कँ काज जड़िसँ हेतै

भाइ !
आब ककर प्रतीक्षा ?
सभकँ देबहे पड़त परीक्षा

जोड़ 'कँ काज जड़िसँ हेतै।

सर्वसम्मति बनयबाक क्रममे

सभ दृष्टिए देब' पड़ैत छैक धिआन
ओहिना तँ नहि
क' देल जाए महिमा बखान
नीक लागल आनि बैसा दिऔ
समीकरण बना, सभ सरिआ दिऔ

सर्वसम्मति बनयबाक क्रममे
मोकि देब जनतंत्रक कण्ठ
कोनहु दृष्टिए नहि कहल जा सकैए उचित
बहुमत जँ आँशिक जनतंत्र अछि
तँ सर्वसम्मति मात्र एकटा वंचना
कोनो संघ, कोनो संस्था
वा कोनो अर्द्धविकसित जनतंत्र
भ' सकैए प्रत्यक्षे एकर साक्षी।

तकरे हो जीर्णोद्धार

जकर दरकार
तकरे हो जीर्णोद्धार
बहुत किछु छुटल
बहुत किछु टुटल
बहुतो केर नहि बाँचल सिरखार।

बहुतोसँ छल गौरव
बहुतोसँ सौरभ
आब लुप्त, गुप्त, विलुप्त भेल
हेराएल
भुतलाएल
ढ़नमानाएल
करहे पड़तै से स्वीकार।

अतीतक गौरव-गाथा ल' होउ गौरवान्वित
आभा-प्रभा ल' चमत्त्कृत
मुदा अनुपयुक्त जे आइ
तकरो लेल किए अनेरो
पिटैत रहब कपार।

जाति

ओ तँ दूओ टा जाति
बनएबाक लेल
नहि छलाह तैयार
मुदा भ' सकैत छलाह तखन अपने
बेसी अपसिआँत।

गढ़ि
सुनझा
जाए चाहैत छलाह गाढ़ निद्रामे आब
सभ किछु क' देब' चाहैत छलाह एहि तरहेँ व्यवस्थित
की कार्य-कारण निमित्ते
चलैत रहओ संसार
से बिनु दूटा जातिए
नहि भ' रहल छलैक संभव
अछताति-पछताति
बनौलनि दूटा जाति
स्त्री आ पुरुष।

परम्पराभंजक

बढ़ल नह कटैत-कटैत
काटि बैसलहुँ जीवितो
एकटा बिसबिस्सी
एकटा दर्द
क' रहलए तबाह।

उत्साह पड़ि रहलए उल्टा
घर आ घाट केर बीच
बनि गेलए एकटा
विकट सन बाट।

साहेब

झा, मिश्र, पाठक, यादव, पासवान
जखन शंके नहि कतहु, तँ कोन समाधान ?
ठाकुर, राय, चौधरी आ कि कुमार
तखने शंका हजार
ककर पौ बारह ?
चेहरा पर ककर बाजि जयतैक बारह ?
केम्हर गोटी लाल ?
अनेरो कैँ होएत के सभ बेहाल ?
ककरा सभकेँ सटबाक भेटतैक सुयोग ?
ककर सभक कपारमे सटि जएतैक दुर्योग ?
ककरा साहेब लगौताह मुँह ?
देख' नहि चाहताह ककर-ककर धूह ?
'स्व' लेल मोनमे फुटैत रहल लड्डू
'पर' संग बरु होइत रहओ गड़बड़-'गट्टू'
झा, मिश्र, पाठक, यादव, पासवान
ठाकुर, राय, चौधरी आ कि कुमार
ताहि पर सभटा दारोमदार।

फेर हमरो नहि टोकब

यौ ! नहि टोकिऔ ! नहि टोकिऔ ! नहि टोकिऔ !
यौ ! नहि रोकिऔ ! नहि रोकिऔ ! नहि रोकिऔ !
देखै नहि छियैक ?
गाड़ी केर आगाँमे लिखल
'राज्य-सरकार'
निजी गाड़ी छैक तेँ की
अवस्से हेतैक
कोनो सरकारी ऑफिसक कारपरदार।

देखै नहि छियैक ?
कते पैघ अक्षरमे लिखल रहैत छैक
'सभापति, विधानसभा'
आ ताहि बीच मेहीमे
'लोक लेखा समिति'
आ कि आन कोनो-कतेको समिति-तमिति।

तेँ त' लोको लिखाब' लगलै आब
अपन-अपन गाड़ीपर
'बाभन, क्षत्री आ भूमिहार'
हे ! फेर हमरो नहि टोकब
जँ हमहुँ लिखा ली अपन गाड़ीपर
'लट्ठधर गोआर'।

भिन्ने बथान

बेटापर हुकुमति नहि छनि
गामपर चलाब' चाहै छथि
मुँह लागल जबाब दै छनि पुतोहु
मुदा भरि गाम रोआब जमाब' चाहै छथि
एखनो धरि छिच्छा ओहने छनि
से की आब ओ जमाना रहलैक ?
सभक अपन जिनगी छै
अरमान छै
हिनकर मुदा एखनो भिन्ने बथान छनि
छनिहे पुरना ढाठी।

सेवा-निवृत्त भ' अएलाह तँ लगलैक
करताह आब किछु गामक भला
मुदा हुकुम चलएबाक भेल अभ्यस्त
आब दर-दिआदपर चला
कर' चाहै छथिन पस्त।

लोक पूछतनि नहि किएक
पूछतनि तँ फेर बात कोना नहि चलतनि
बातो हुनकर
कोना अठन्नी-चौबन्नी तँ होइत नहि छनि

जे क' देत किओ निरस्त
एहि अखाड़ाकेँ छथि पुरना खेलाड़ी
जानै छथि
प्रतिपक्षीकेँ कोना कएल जाइत अछि चित्त
कतेककेँ पहिनेहे
खेत बेचबा साकिन करबा देने छथिन
आब भतबरी करबा
कएने रहैत छथिन त्रस्त।

पुतोहुक नामे मुखिआ चुनाव लड़ि
एखने मुँहभरे खसला अछि धड़ाम
कारण मलहटोली धरि पहुँचैत-पहुँचैत
हिनकर 'शाबर-मंत्र' भ' जाइत अछि बेकाम
आब लोकक खिधांस क' क'
दिन क' रहलाह अछि गुदस्त
फरिकेमे लड़ा-बझा
रह' लगलाह अछि मस्त।

पाग

अछिए एहन
बेसीकाल टिकल नहि रहि सकैए माथपर
तखन हाथे अजबारल रहत कते काल धरि
घुरि-फिरि बात ओतहि।

तखन सभ शहर आ गाममे जँ नहि तँ
कम-सँ-कम सभागाछीमे
अवस्से बनाओल जाए एकटा संग्रहालय
जत' उल्लेख सहित राखल जाए
सम्मानस्वरूप अर्जित-अर्पित सभटा पाग।

तकला-हेरलापर भेटिए जाएत
ओतहु बहुतो
खसल करए जे साले-साल।

कोन जरूरी छलैक ?

यौ महाराज !
जखन जयन्ती, पुण्यतिथि धरि स्मरण नहि
त' कोन जरूरी छलैक
प्रतिमाक अनावरण ?
महिमा बखान ?
पैघ-पैघ व्याख्यान ?

मानलहुँ
माँग रखने होएता प्रेमीलोकनि
भक्त, अनुरक्त
सोचने हेता ओ सभ
प्रतिमा लागि गेने रहता समक्ष
प्रेरित करैत रहता सदति।

मुदा जखन चरण-शरण धएने
संगे-संग घबहा कुकुरे सूतैए
आबि-आबि
दोसरे-तेसरे मूतैए
नहि जाइए बहारल
नहि पखारल
त' कोन जरूरी छलैक शिलान्यास ?

अनेरो केर विन्यास
पट्ट-उत्कीर्णन
आस्थाक छद्म प्रकीर्णन।

पाखण्ड विरोधीपर
ई कोन पाखण्डक प्रहार ?
कीर्ति छन्हिए
राखि लेतनि जिआ क'।

कार्यकर्त्ता

यौ ! आब कत' छथि कार्यकर्त्ता ?
बेसी तँ नेता छथि
किछु दर्शक
किछु अन्धसमर्थक
किछु स्वयंभू पथ-प्रदर्शक छथि।

कार्यकर्त्ताक हैसियत बचबे की कएल ?
ने आवाज
ने ओ अंदाज
अपन घरक आटा गिल क' क'
अपनहि जेबी ढ़िल क' क'
अपनाकेँ कएने बेलल्ल
यौ ! कत' भेटताह आब कार्यकर्त्ता ?

कार्यकर्त्ता माने एकटा लक्ष्य
एकटा संग्रामक समक्ष
स्वार्थ त्यागी
समाज-समर्पित अनुरागी।

शुद्ध कार्यकर्त्ता ताकब
माथापच्चीक काज भ' गेलए आब
किओ कार्यकर्त्ता बन' तँ नहि अबै छथि आब
नजरि कतहु आर गड़ि गेलए।

अन्हारमे ओझराएल इजोत

ओमहर,
शान-शौकत आ मौज
एमहर
चोन्हाराइत आँखि
अन्हराइत रस्ता
देखि-देखि
प्रक्षेपित होइत
अतिरिक्त इजोत।

ई तँ नहि छलैक ओमहरका हिस्सामे
नहि छलैक ओत' ओकर कोनो खगते
मात्र प्रदर्शन !
प्रदर्शन !!
प्रदर्शन !!!

कतहु पसरल छैक अन्हार
छैक भीषण गुमार
बाँचल जँ रहितैक ई इजोत
अवस्से होइतैक ओतहु उपयोग
किछु आरो लोककेँ
भेटि जइतैक आफियत

ई अतिरिक्त इजोत
बाधक बनि गेलए समरसतामे
आर की द' सकलए
प्रदर्शन-तुष्टि छोड़ि ई
आर कोन जरूरति पूरा क' सकलए ?
अहं-पुष्टि छोड़ि ई।

अन्हारमे रहि सकैए अन्हार
रहि नहि सकैए किन्हु इजोत
मुदा प्रदर्शन लोभे
अन्हारेमे ओझराएल रहि गेलए इजोत।

वर्जित अछि आगि एतए

एतए वर्जित अछि आगि
घोषित कएल गेलए आगि निषिद्ध क्षेत्र ई
आगि जरएबापर छैक एतए पूर्ण प्रतिबंध
बिनु जरौने आगि जँ काज चलि सकए
तँ प्रवेश करू एहि क्षेत्रमे
सलाइ तक रखबापर लागि गेलए एतए रोक।

ई छैक वैह जगह
होइत छलै जतए नित-नित पुतरा-दहन
फूका जाइत छलैक कतेको
सरकारी आ निजी वाहन
कहिओ काल तँ भावावेशमे
कोनो उन्मादी क' लैत छलैक अपने आत्मदहन
समाचार पत्रक मुखपृष्ठपर
स्थान पबैत रहलए ई जगह
एहि जगहक नाम सुनिते
लोक भ' जाइत छलए सशंकित
गोली चलि ई जगह भेल अछि
कएक बेर कलंकित
पथरबाजीमे तँ जेना
एतुका हवो अपसिआँत रहए

तोड़-फोड़ तँ जेना एहि ठामक
नस-नसमे व्याप्त रहए
लोक जरबैत रहलए एतए
एक-दोसराक घर आ दोकान
शटर आ दरबज्जा तोड़ि लूटपाट
कहाइत रहलए एतुका मस्ती
लगैत रहलए तखन कर्फ्यू
खुलैत रहलए राहत-शिविर
पीड़ित लोकक बीच
बाँटल जाइत रहलए
आवश्यक वस्तु-जात संग
न्यायक आश्वासन
ताहि बीच शुरु भ' जाइत छलए
जन-प्रतिनिधि, दल-प्रतिनिधि सभक
धुरझार दौड़-बरहा
आ अपन-अपन राजनीतिक चश्मासँ
देखल-सुनल वृतांतक
देल जाइत छल
बढ़ा-चढ़ाक' व्यौरा।

देखैत-देखैत
सहैत-सहैत
अकच्छ भ' गेल एतुका लोक
अपनहि थानपर रहैत
कतेक दिन धरि बनि बौक
बैसि
कएलक निर्णय

निकाललक रस्ता
आगि नहि लेसत किओ आब एतए
आ नहि लेस' देत ककरो
'जन-पंचायत'क घोषित क' देल गेलए
'आगि-निषिद्ध क्षेत्र' ई
तहिएसँ वर्जित अछि आगि एतए।

दूर चलि गेलए चान

'छाक भरि पानि मुफ्त
एक कप चाह, मिजाज दुरुस्त'
अहूँ यार !
कोन जमानाक गप ल' क' बैसि गेलहुँ ?
फोकटक पानि
कहिआ ने भ' गेल बन्द
एहि प्राकृतिक सौगातकेँ
लागि गेलैक नजरि
जहिएसँ सौदागरक आँखि
गड़लैक एमहर
शुरु भ' गेलए व्यापार
बान्हि देल गेलए बान्ह
दूर चलि गेलए चान।

उपरौंझ

एम्हर-ओम्हर छिड़िआएल जाइतमेसँ
पाँच-सात टा कैँ बिछि लेब
नहि कोनो कठिनाह
मुदा जँ कसि क' पकड़बैक बाँहि
घिचिबैक अपना दिस
तँ झटकि हाथ बढ़िए जाएत ने आगू
से बस्स चिचिआइत करैत रहैत अछि चिरौड़ी
स्टेशन, बेता* कि टावर*।

सभ टेम्पूवला भेल रहैत अछि अपसिआँत
बाघ-मोड़* पर।

बुझले छैक
ठाढ़ नहि होब' देतैक एत' बेसी देर
सटका लेने डरबैत ट्रैफिक पुलिस
ओहो त' अकच्छ रहिते छैक
एकर सभक उपरौंझसँ।

** दरभंगाक स्थानसभ*

व्यथा-कथा

हौ! बड्ड रौद, पानि, बसात सहलौं
चारिटा ईंट आनि बैसाओल गेल रही तहिआ
गड़ाएल धुजा तकर बाद।

चढ़' लागल चढ़ावा
चौबन्नी, अठन्नीसँ होइत
एक, दू, पाँचकेँ सिक्का
अबैत-जाइत ट्रैक्टरसँ उतरए लागल रहए
प्रसादी रूपैँ दू-चारिटा क' पजेबा
हौ! रौद सहलहुँ
पानिमे तितलहुँ
ठारमे ठिठुरलहुँ।

ओसूलाएल चन्दा-बट्टी
जमा भेल ईंट, बालू, गिट्टी
तखन जा सुरक्षित भेलहुँ अछि आब
भेलहुँ अछि कने आश्वस्त
की तौं तरेर' लगल' आँखि
बाज' लगल'
ई त' अछि अतिक्रमण
कर' लगल' विषवमन।

लाक्षागृह

किओ ने किओ तँ जरबे करत
बनैत रहत जँ लाक्षागृह
जरि, भष्म होइत रहलए कतेक
एहि लाक्षागृहमे
से के सभ छलैक भाइ ?

के सभ जरैत रहलए
राजनीति केर एहि लाक्षागृहमे ?
ककर सभक शोणित पिबि
खदकैत रहलए जड़मत्त लाह ?

अंकित नहि कएल गेल
कतहु ओ नाम सभ
नहि भेलैक चर्च
नहि देल गेलैक अश्रूपूर्ण श्रद्धांजलि
नहि भेलैक शांतिपाठ।

आउ भाइ ! ओकरे सभक स्मृति-तर्पणमे
समर्पित क' दी एहि सदीकेँ।

प्रश्नचिन्ह

एक आँखिक प्रश्नसँ
जँ दोसरे आँखि
चोराब' लागए नजरि
तँ प्रश्न केर सम्यकतापर
ठाढ़ भ' जाइते छैक प्रश्नचिन्ह।

जीवन पैघ कि जीवन मूल्य
धर्म पैघ कि धारण कएनिहार
राष्ट्र पैघ कि रहनिहार
उतारा संग
जँ ठाढ़ भ' जाइत हो अनेक प्रश्न
तँ उत्तर केर सर्वस्वीकार्यतापर
ठाढ़ भ' जाइते छैक प्रश्नचिन्ह।

'वाद' केर रक्षा हो कि जीवनक
धर्म कि धारण कएनिहारक
राष्ट्र कि रहनिहारक
एकसँ दोसरा जँ भ' जाइत हो अतिक्रमित
तँ नेतपर
ठाढ़ भ' जाइते छैक प्रश्नचिन्ह।

राजा पोखरिक माछ

आखिर मुँह फोलि कहिए ने देलक
राजा पोखरिमे मात्र सोन सन-सन माछेटा नहि
डोका-घोंघा, सितुआ-बेंग
सभ रहैत अछि
ओहि दिन तँ एकटा काछु
निकलि आएल पोखरिसँ बाहर
आ कह' लागल
'हम छी तँ ने पोखरि, पोखरि अछि
राजा, राजा छथि
हमरे सभ ल'क' ने राजा
हमरे सभ ल'क' ने राज
हमरे सभक पीठपर तँ लादल अछि
सभटा काज
पूरा समाज।

ई दूटा शब्द

ई दूटा शब्द ल' की करब ?
कत धरब ?
कते असारब-पसारब ?
नहि बनत एहिसँ कविता कि कथा
कोनो आलेखो त' नहि लिखल जा सकैए
एहि दूटा शब्द ल'।

एक-दोसरासँ खेलाइत अछि चोरानुक्की
दुसैत रहलए एक-दोसराक मुँह
कटाउझ करैत
नहि उपस्थित क' सकल कहिओ
कोनो नव विकल्प।

ई दूनू ठाढ़ रहैत अछि सदति
एक-दोसरासँ लड़बाक मूड बनौने
आ मेल-मिलापक नहि बाँच' दैत अछि
हमरा-अहाँक बीचमे कोनोटा बाट।

ई एक-दोसरासँ कएने रहैत अछि कानि
सधबैत रहैत अछि ओलि
ढ़ाही लेबाक करैत रहैत अछि ओरिआओन

आ ताहि लेल प्रेरित करैत रहैत अछि
हमरो-अहाँकेँ सेहो।

मुदा तरे-तर घेंटा-जोड़ी कएने
दोसरा सभकेँ निकालि दैत अछि
सुविचारित ढ़ँगे
भविष्यक सुनियोजित योजनासँ।

एहन सन बात लगैए विचित्र

कोनो राष्ट्रीय कि प्रांतीय पार्टीक
कोनो ने कोनो सेल केर
स्थानीय अध्यक्ष कि सचिव
कोनो परिषद् कि समितिक सदस्य
पंचायतक मुखिया कि सरपंच
सभक हक बनिते छैक
प्रदर्शित करए
अपन भीआइपीपना।

एहिमे ककरा नहि छैक ओकाति
राखए चारिचकिया
आ लगा आगाँ
बड़ी टा नेमप्लेट
आ पाँच-सातटा हेडलाइट
करा दिए सामनेवलाकेँ
तीव्र ज्योतिकारी
अपन भीआइपीपना केर प्रतीति।

एहन अनुभूतिसँ गुजरब
नहि लगैए कनेको अस्वभाविक।

बाँटल जाए जँ वाहन सभकेँ
दुएटा श्रेणी बनैत अछि
संस्थागत आ व्यक्तिगत
विभाग धरि तँ ठीक
मुदा पदानुसार नामांकन
की अनेरो नहि जमबैत अछि धाक ?

ई कोनो आक्रांता शासक वर्गक
भ' सकैत छलैक चालि आ चरित्र
मुदा जँ कएल जाइत हो
जनकल्याणकारी राज्य-व्यवस्थाक उद्घोष
तँ नहि छैक एकर कोनो औचित्य।
मुदा ई सभ देखैत-देखैत
भ' गेल छी तते ने अभ्यस्त
की एहन सन बाते लगैए विचित्र।

फुकना

फुलैत अछि, फुलैत अछि
उठैत अछि, उठैत अछि
हठात् फुटि जाइए
थोपड़ी रूकि जाइए
सपना टुटि जाइए

एहि रंग-बिरंगक फुकनामे
बुझाइत छल बड्ड किछु अछि
ई त' साफे खाली निकलल
पोलाओ एकदम्मे खयाली निकलल।

कत' पतुकान देने छी यौ निर्माता ?
कत' गुम्मी लादि बैसल छी यौ भागय-विधाता ?
बड्ड-बड्ड बन्हने छलहुँ बान्ह
दूर धरि छनने छलहुँ छान्ह
हलात तँ वैह 'माली' निकलल।

फुकनामे भरने छलहुँ
सपना
बनि गेल छलए 'आइकॉन'
जखन सभ कलाबाजी छलए हवाक बले
तखन तँ सत्ते ! हवे बलशाली निकलल।

दिल्ली दर्शन

गुड़रैए आँखि बिलाड़ि
मुम्बइकैं, दिल्लीकैं
ताकत छै गुड़किल्लीकैं।

स्थानीयताक डम्फा पिटा रहल
संकीर्णताक बिआ छिटा रहल
रोपाएल नहि विकासक बिचड़ा
सगरो खंघरा उगि आएल हलदिलीकैं।

समानुपाती विकासकैं ठेङा देखाओल गेल
दाबि-दाबि आँखि भेंगा बनाओल गेल
ढोबि लेलक खनिज-सम्पदा औने-पौने
हरित-क्रांतिक रहल बाट छेकने
तखनो श्रम-बल, मेधा-कलसँ जँ बढ़लौं
तँ राजनीति कोन डण्टाकैं आ गुल्लीकैं।

टेकने छी पर्वत बजल टिटही
विद्वेषक फुकैत रहल पिपही
दूर किन्नहु नहि रहतै दिल्ली
जत' संभावना तत' गड़ाएत किल्ली
किओ त' मुँह बन्न करओ शेखचिल्लीकैं।

राजधानी एक्सप्रेस

दिल्लीक लड्डूबला बात नहि
किछु अर्थमे गाड़ी छुटैत रहबाक अपसोच
कहल जा सकैए।

जँ खुलैत छैक लगातार
भेटैत छैक फ्रीमे अएबा-जएबाक पास
त' ककर आंतरिक इच्छा नहि हेतैक ?
चढ़ि, पहुँचि, क' ली जन्म सार्थक।

कर्म नहि
जँ जन्मक दोखेँ छुटि रहलैक बेर-बेर
त' कोना नहि हेतैक आक्रोश
यज्ञ तँ आहुति
आन्दोलन तँ विध्वंस।

बाप-बेटाक बाद
तेसरो पीढ़ी जँ उठौतैक निर्विघ्न
स्वर्णिम अवसरक लाभ
त' धैर्यक सुइआ
चलिए पड़तैक उल्टे मुँह।

से के कहत ?

ककर हिस्सा निकलि आएत कत'
से के कहत ?
हिस्सा लेब' के पहुँचि जाएत कत'
से के कहत ?

ककर अन्नमे ककर भोग
ककर धनमे ककर जोग
दाना-दानापर लिखलाहा नाम
गोली-बन्दूक करए सलाम।

परिचय-अपरिचय दुनू
हिस्सा वसूल करबाक बनि गेलए साधन
की वसूल कर' के चलि आएत कत'
से के कहत ?

कबिलाहाकेँ उपासल नहि देखल कतहु
पछुलगुआ बिनु हकासल नहि भेटल कतहु
धनिकहाकेँ लूटि बाँटब गरीबहामे
फूसिआही फुकना फुटल कते
से के कहत ?

'नोनछराइन पसेनापर मिठगर सन स्वप्न फ्री'
केर नगाड़ा बजाब' के चलि आएत कत'
से के कहत ?

उपदेशक

कवि, कथाकार कि व्यंग्यकार
भ' सकैत छथि उपदेशक
वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्
कि मानवाधिकार-कार्यकर्त्ता
भ' सकैत छथि उपदेशक
समन्वयकर्त्ता, विश्लेषणकर्त्ता
सेहो भ' सकैत छथि उपदेशक।

उपदेशक चाही एहन
छुटय नहि जिनकासँ
धरतीक कोनो कोनक
कोनोटा मानवक मनोभूमि।

एहन नहि कि
कोनो महाशक्तिक नायक बनि
ध्वस्त करैत सभ किछु
देथि उपदेश
दुनियाकेँ बचयबाक लेल
नहि छलैक एहिकेँ अलावे
कोनो दोसर रस्ता।

घोड़ा

घोड़ाक कमी भेल जा रहलए दिनपर दिन
घोड़सवार ओना अछिए एखनो तैयार
खोजने फिरैए
मुदा गलते घोड़ापर लागि जाइत छैक
बेसी काल दाओ
टभकि उठैत छैक तखन
तरे-तर घाओ।

सिद्धहस्त घोड़सवार
पहिचान रखैए
मुदा तैओ आब झखैए
खोजनेहो नहि भेटैत छैक आब
मनमाफिक घोड़ा।

तखन तँ बस्स वैह छलाह

मुट्ठीसँ ससरि रहल समयपर
बैसि
बतिएबाक रहए
ओझराएल डोर सोझरएबाक रहए।

अएलाह
स्थगित करैत समय
किछु समयक लेल।

देखलाह
नहि देखल सन सभकेँ।

सुनलाह
अनसुनल सन सभ किछु।

बजलाह
तखन तँ बस्स
वैह छलाह।

बजारक बीच

बीच बजार चौबटिआपर भ' ठाढ़
पढ़बै
बजारकेँ गारि।

एत' छैक सभक अबरजात
एत' छैक सभ प्रोडक्टकेँ
कोनो ने कोनो तरहेँ
खपा देबाक जोगार।

एत' छैक अपन अस्तित्वकेँ
बचा लेबाक ब्रह्मास्त्र
एत' छैक सभ लग
अपनाकेँ साबित करबाक
कोनो ने कोनो औजार।

तखने तँ एतहि
बीच चौबटिआ पर भ' ठाढ़
पढ़ै छी दिनादिष्टी
बजारकेँ गारि।

अशोथकित पार्थ

नहि छथि शरशय्यापर आब भीष्म
नि:शस्त्र नहि क' सकल
कोनो शिखण्डीय प्रयत्न
पसरि बैसल छथि
छेकने आसन-सिंहासन।

किंकर्तव्यविमूढ़
निष्प्रयोजित क्रुद्ध
पटकि-पटकि माथ
बुझा गेलनि यथार्थ
अशोथकित भ' बैसि गेलाह
कतेको पार्थ
कतेको पार्थ।

प्रतिक्रियाहीनता

मूड़ी धरि नहि घुमबै छथि
हिलएबाक बात तँ दूर
आँखि बहुत दूर जा थिर भेल रहैत छनि
कान कतहु दूर ध्यानस्थ धएल रहैत छनि
'प्रणाम सर' पर प्रतिक्रियाहीनता
हुनक बड़प्पनक अभिन्न अंग बनल अछि
अहं हुनक पर्वत जकाँ तनल अछि।

आँखि

अस्वीकृतिएक एकटा रूप छल ओ
प्रतिकारक आत्म-यातनादायीपूर्ण निर्णय
निश्चय कएल गेल रहए जखन गाँधारी द्वारा
किन्नहु नहि बनतीह
भावी आन्हर पति केर आँखि
(भावी पीढ़ीकेँ तहिए धकेलि देल गेल रहए अन्हार खाधिमे।)

अनायासे नहि भ' गेल रहनि हुनका
अन्हार अतिशय प्रिय
विरोधक' एकटा सत्याग्रही (वा दुराग्रही)
रूपेँ तँ छल ओ।

पिता, बन्धु केर विवशता
देखि लेने छलीह गाँधारी
मुदा विवश नहि छलीह ओ
बनबा लेल कोना जन्मांधक आँखि।

तेसर डेग

तेसर डेग
कत' धरता वामन ?
दू धापमे नापि लेलनि
धरती आ आकाश
कने पुछिऔन राजा बलिसँ
ओरि दबा लेल पीठ
की एखनो छथिहे तैआर ?
ओ त' 'हँ' कहि देता एखनो
मुदा हुनके कहलासँ
की होएत आब ?
परिवार छनि
बन्धु-बान्धव छनि
सभक अपन मरजी छैक
आ सभसँ महत्त्वपूर्ण तँ प्रजाक सम्मति हेतैक आब
की आबो सभ जयकारा लगौतनि ?
माथा झुकौने संग चलि अएतनि ?

तखन तेसर डेग
कत' धरता वामन ?
संभव एहि बेर पाताल-लोक नापि लेथि
बहुत किछु तँ छैक ओतहु

इन्द्रक नजरि आब जा क' गड़लनि अछि
अवस्से गोहारि लगा गेल होएता
व्यर्थे छोड़ि देलहुँ प्रभु तहिआ
आब करु एहन उपाय
पाताल धरि हम सभ पहुँचि जाइ
एहिमे भलाइ छैक
जन-गणकेँ
सकल भुवनकेँ।

मुदा ओतहु बओना अछि
डाँड़ सक्कत कएने
तीर-कमान धएने
बुझ' लगलए
पाताल अछि तँ हम छी
हमर सभ्यता अछि
संस्कृति अछि
माए-बाप, भाय-बहिन
सभ किछु तँ अछि ई पाताल
जानपर खेलि जाएत।

तखन कत' धरता वामन
आब अपन तेसर डेग ?

दोसर स्वर्गक योजना

अनर्गले बुझल गेलनि तहिआ
दोसर स्वर्ग बनएबाक विश्वामित्रक संकल्पनाकेँ
विरोधमे ठाढ़ भ' गेलनि सम्पूर्ण देव-समाज
एकटा आर' जँ ठाढ़ भ' जाएत स्वर्ग
त' नर्कक परिकल्पनाक की होएत ?
पूर्वजन्मक कर्मानुसार
फल भोगबाक मन्तव्य
कत' जा ठहरत ?

कथमपि नहि सफल होब' देल गेल
दोसर स्वर्गक योजना
यजमान रहि गेला लटकल
बनि त्रिशंकु।

धार बसबैत रहलए गाम

हमर गामक हिस्सामे
बाँचल रहि गेल छाड़न
कहिओ बहैत रहल होएत एहि द' धार
भ' सकैए तहिआ नहि हो एतए हमर गाम
भ' सकैए धारे देखि एतए बसि गेल हो हमर गाम
मुदा आइ हमर गामक हिस्सामे
रहि गेलए छाड़न।

जनमेसँ मोनमे बहैत रहलए
एकटा धार
जे बसा एतए हमर गाम
चलि गेल कतहु आन ठाम
बसाब' लेल कोनो दोसर गाम।

उजाड़ब नहि रहलैक कहिओसँ
धारक प्रवृत्ति
धार तँ बसबैत रहलए गाम
आ बसा-बसा विदा होइत रहलए
बसाब' लेल कोनो दोसर गाम।

के जुड़ौतैक ?

लोटा भरि जलसँ जुड़बा लेल
नहि प्रतीक्षारत रहैत हेतैक
कलमबागक गाछ सभ
अपन नियति बूझि
कहिया ने गहिया क'
पकड़ि लेने होयत माटि
सोर' अपन ततेक ने तर ल' गेल होयत
जत'सँ किछु ने किछु रस पाबि
बैशाख-जेठक आतपमे सेहो
बचा लेबे करैत होएत अपन जान।

बिनु पटेनहो
साले-साल होइत रहलए पल्लवित
फागुन अबितहि मज्जरसँ
गमगमा उठैत छैक बाध-बोन।

कलमबाक संग परिचिति
गोटरस, कित्-कित् कि सिंगिया धरि
नहि सीमित अछि
टिकुलासँ गोपी खसबा धरिक संग
नेनपनक एकटा अविस्मृत
अध्याय अछि।

गामक परती-पराँत पड़ल खेत-पथार
ताकि रहल होयत बाट
जा लगबितियैक ओहिमे हमहु किछु नवगछुली
मुदा के जुड़ौतैक ?

मोनक इजोरिआमे गाम

एखनो लगैए
मीता ठाढ़ अछि हाथमे रंग लेपने
अपन पूरा अमला-खसलाक संग
कोनटा-कोनटापर मोरचा सम्हारने।

एखनो लगैए
मीता ठाढ़ अछि हाथ पाछाँ नुकौने
आगाँ होब'वला हुरदंगक करैत धिआन
मुँहपर पसरल छैक रहस्यमय मुस्कान।

हम अंत-अंत धरि
बचाव' चाहैत रहलहुँ मुँह
आ ओ रचने रहल व्यूह
ओरि देलियैक जखनो देह
ओकरा रहैक तखनो संदेह।

एखनो लगैए मीता ठाढ़ अछि
घेरौर कएने।

मोनक इजोरिआमे गाम अछि।
नेनपनक अगोरिआमे गाम अछि।

ओना गाममे आब
नहि हम रहै छी आ ने मीता
पाबनियो-तिहार
ने गाम दिस हम तकै छी आ ने मीता।

धुरी कतहु आर अछि

['धुरी' कविताक कवि श्री भीमनाथ झाक लेल...]

सभगोटेसँ आबि गेलहुँ ?
नहि, नहि !
एखन एकसरे अएलहुँ अछि
हमर ई कहलापर
हमर आएब
वा नहि आएब
जँ बरोबरि लगलनि हुनका
तँ मानहे पड़त
'धुरी' कतहु आर अछि।

दुरभिसंधिसँ दूर

['गामसँ बहराइत गाम'क कवि श्री अजित आजादक लेल]

महाभिनिष्क्रमण नहि
नहि पलायन
सम्मिलन-मिलन, प्रक्रियाक उत्तरायण
मात्र उत्तरगाथा नहि, प्रश्नगाथा सेहो अछि
किछु नव केर प्रत्याशा सेहो अछि।

उपटैत-उपटैत उपटि जाएत जहिआ
शुरू भ' जाएत पुनरूत्थानक नव अध्याय
गाम धुरि आओत गाम तहिआ।

शहर किछु दूर धरि अरिआत' अवस्से आओत
ओतहि गाड़ि देल जाएत तीत-मीठ स्मृतिक
सभटा शिलाखण्ड
किओ पूजा करत तकर
किओ मानत मात्र पाखंड।

दुरभिसंधिसँ दूर
तकर बाद मनुक्खे टा चिन्हल जाएत
कूड़ा-करकट बहारि-सोहारि भरि-भरि बाकुट उठा
'डस्टबीन'मे धएल जाएत।

पोखरि

[पोखरि एकसँ चारि धरि कविता-संग्रह 'कइएक अर्थमे' संकलित अछि]

पाँच

किओ नहि कानि रहलए
पोखरि छोड़ि एतए
ओना सड़क सेहो बड्ड खसता हालतिमे
तैओ कहिओ काल होइते छैक मरम्मति
धरना-प्रदर्शनसँ तंग भ' बहिर प्रशासन
सुनिलैते छैक देर-सबेर
अकच्छ भ' जल-जमाओसँ स्थानीय निकाय
सड़कक काते-कात
नाला-नाली उड़ाहि दैते छैक
तँ की किओ पुछतैक पोखरिओ के ?
देखतैक ओकरो दिस ?
लेतैक ओकरो सुधि ?
प्रशासन चुप,
भने धियान नहि छैक एमहर जनताकेँ
जनता चुप,
भने भेटल अछि अइल-फइलसँ
कूड़ा-करकट फेकबाक सुविधा।

छओ

उमेरक बात नहि छैक
जँ श्वासा अवरुद्ध छैक
तखने ने निकलैत छैक मुँहसँ
एहिसँ नीक उठा लितथि भगवान।

एकरोसँ जेठ मन्दिर, मस्जिद आ मकान
चकचकाइत शानसँ ठाढ़ अछि
शहरक बीचो-बीच।

सुआति छैक ई दुर्गति
नहि ने बनि सकल आइ धरि ढ़ंगसँ
हिन्दू कि मुसलमान
ई पोखरि।

सात

मुनहारि साँझ
मन्दिर जएबासँ पहिने
होइए मोन
धो ली पएर
क' ली कुडुर
मुदा देखि पोखरिक पानि
इच्छा मरि जाइए
तखने नजरि जाइए

पोखरिक मोहारपरका चापाकलपर
अहा ! कते दीव !
चलू ! कहुना उपकारक बनले अछि
एखनो धरि पोखरि।

आठ

नहाइत अछि पोखरिमे श्यामवर्णा
गत्र-गत्रसँ छोड़बैत अछि कादो
हिलकोरि दैत अछि पानीकेँ
कतिआ जाइत अछि जलकुम्भी
जल-क्रीड़ा करैए अलमस्त भ'
सर्वांग डुबा लैए
अंग- अंगकेँ ताप मेटा लैए।

पहिने होइत छलैक घाटपर
मनुक्खक राज
आब छैक एकछत्र ओकरे साम्राज्य
रोमल जाइत छलि पहिने
आब रानी बनि इतराइत अछि
बेफिकिर भ' नहाइत अछि।

अवडेरल रहल ई सभ दिनसँ
पोखरिओ आब अवडेरा गेलए
तेँ दूनू उन्मुक्त भ' खेलाइत अछि
कनिओ नहि धखाइत अछि।

ई छोट-छिन गाछ

जाधरि नहि निकलतैक पात
नहि होइए विश्वास
बचौने अछि अपन प्राण
ई छोट-छिन गाछ।

गलती हमरे
नहि गमि सकलियै
मौसम केर रुखि
नहि बूझि सकलियै
एना भ' जएतैक रौदी।

एहना स्थितिमे
किन्हु नहि उपाड़ि
एत' सँ ओत' करितहुँ
ई गाछ।

ई भविष्यक गाछ
चाही एकरा हितकर
पानि, रौद आ बसात
अवसर चाही अनुकूल
बढ़बा लेल।

नित्तह जा-जा देखै छी
आँखि गाड़ि-गाड़ि
किनसाइत कतहु फूटल हो कनोजरि
किनसाइत कतहु भेटि जाए जीवनक चेन्ह।

खोज-खबरि

ककर खोज-खबरि रखबै
नहि रखबै ककर-ककर ?

ककर खोज-पुछारी करबै
नहि करबै ककर-ककर ?

जीवैत चलि आएल परम्परामे
बिसरबै ककरा-ककरा ?

नहि अरघैए
छोड़बै तैओ कोना तकरा ?

निर्णय नहि नीति-नियंता केर
निर्णय हो सभ जनता केर।

एकहिटा

एकहिटा सोचमे नहि छैक सामर्थ्य
आच्छादित क' लेत सम्पूर्ण लोक
आ एकहि पक्षकेँ भेटि जएतैक
सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व।

एकहिटा वक्तव्य नहि भ' सकलए
पूर्णसत्य आइ धरि
कोनोने कोनो दोग छुटले रहि गेलैक
दृष्टिपथसँ ओकर।

एकहिटा महाभारत नहि मेटा सकल
सभटा आसुरी प्रवृत्ति
तखन तँ बिझा गेल रहितैक
सभटा अस्त्र-शस्त्र।

आन ठामसँ

आन ठामसँ देखू
हवा विषाइन भेलैए
त' चिन्तो जगलैए।

तनातनी छै
अनबन छै
ताहिमे कत' धरि संलग्न छी
कत' धरि कात छी ?
कने आन ठामसँ देखू।

भ' सकैए ओत' सँ
दोसर पृष्ठ देखाए
जे बेजाए बुझाइत रहल आइ धरि
सैह नीक बुझाए।

भ' सकैए भेटि जाए
दृष्टि उधार
सम्हरि जाए बात
भ' गेलए जे अनेरे बेसम्हार।

जगह बदलि देखब
नजरि बदलि देखब थिक मीत।

इतिहास कहलक

इतिहास आबि स्वप्नमे कहलक
साक्ष्य नहि छी हम
अहाँक कोनो झग्गड़मे।

सहजताक संग जँ ल' नहि सकब
सहज जँ भ' नहि सकब
बनाएब हमरा
अपन पूर्वाग्रहक साधन
तँ नहि रहब उपस्थित हम
अहाँक कोनो रग्गड़मे।

अपना मोने गीजू-तिरू
नहि छी कतहु हम ठाढ़
देबाक लेल सफाइ
बुझैत रहू अहाँ
मुदा नहि छी हम
एहन कोनो मर्जक दवाइ।

अहाँ हमर नहि
अपन गीत गाउ
भूत नहि
भविष्यक स्वप्न
आँखिमे सजाउ।

इतिहासक इजोतमे

इतिहाकस इजोतमे
देखै छी कतेको आकृति
आखिआसै छी एक-एकटाकेँ
अभरल सभटा मुखाकृति तँ हमरे अछि।

सभटा आरोपक कठघरामे
हमही छी ठाढ़
नहि जाएब ना-सकार
सभटा अछि स्वीकार।

प्रेमदिप्त नजरिसँ देखै छी
इतिहासक सत्यकेँ
आ बेकछबैत छी
अपन एक-एकटा गलती।

बीच केर रस्ता जँ नहि हो

[पाशसँ क्षमायाचताक संग...]

बीच केर रस्ता जँ नहि हो
तँ ओहि पार वला संग
की कएल जएतैक भाइ ?
मेटा देल जएतैक ?
कि भगा देल जएतैक ?
कि बन्दूकक बलेँ चुप करा देल जएतैक ?
घिचि-तिरि आनि संभव जे
दिनेमे तरेगन देखा देल जएतैक।

कने लथ-उदास चलि सकैत छै
कने चप-उलार रहि सकैत छै
मुदा संतुलन तँ बीचेमे ने बनतैक भाइ !
लोक एम्हरो रहतै
ओम्हरो रहतै।

जँ आनि कतहुसँ किछु
पूरा-पूरी लादि देल जएतैक
तँ एखन धरिक उपलब्धि गमा देल जएतैक
वा बिसरा देल जएतैक
कि बोरिआमे ध' बान्हि-बून्हि
कतहु ल' जा डुबा देल जएतैक ?

निकालहे पड़तैक बीचसँ रस्ता
राखहे पड़तैक सभक संग वास्ता।

कते दिन एहिना ?

कहलियै, से एक पक्ष भेलैक
नहि छैक ओकर दोसर कोन
कहाँ मानैत अछि मोन !

बजलियै, एकटा अभिप्राय निकललै
नहि छैक ओकर दोसर गूढ़ार्थ
सहजे कहाँ होइए विश्वास !

सुनौलियै, एकटा निर्णय भेलैक
रहलियै पूर्णतः तटस्थ
से के करत स्पष्ट ?

दोसरो ठामसँ देखल जा सकैए
दोसरोकँ नजरिसँ परेखल जा सकैए
दोसरो दिस किछु ने किछु तँ हेतै
अवडेरि तकरा
कते दिन एहिना ?
चलैत रहबै !
चलतै रहबै !!

नैतिकताक देहरिपर

नैतिकताक देहरिपर आबि
ठाढ़ भ' गेलए
मशीनादि
हाथ-पएर
आ बड़की टा-टा
आँखिक संगे।

गड़ल छैक सभतरि
चौचक मशीनी आँखि
झुट्ठाकेँ पकड़ि लैत छैक चट्टे
मशीनी हाथ
पएर ठमकि गेलए
धकमका गेलए हाथ
रुकि देखैत छी पाछाँ
हमरे पीठपर तँ
नहि गड़ौने अछि
अपन आँखि
एमहरे बढ़ल तँ नहि चलि आबि रहलए
मशीनी पएर।

नैतिकता हमर
धरा गेलए ताखपर
मुदा मशीनादि लग
नैतिकतापर ओझरा जएबाक
नहि छैक कोनोटा प्रश्न।

वैह स्वप्न तँ अछि कविता

नहि छलैक विश्वास
सार्थक विरोध केर
अर्थगर्भित आवाज बनि
ठाढ़ रहतैक कविता।

मानि लेल गेल छलैक
एक दिन मरि जएतैक
पढ़ि देल गेल छलैक
मरसिआ।

मुदा जीविते रहि गेलैक
खोंखिओ तक नहि भेलैक
नहि चाट' पड़लै
मधु मिला सितोपलादि कहिओ।

टन-टन बजैत रहलै सभदिन
अन्यायीक हृदय धड़कबैत रहलै लगातार।

जाहि कविताकेँ मरि जएबाक
घोषणा क' देल गेल रहैक

सैह कविता घोषणा कएलकए
'सभसँ खतरनाक होइत छैक
सपनाक मरि जाएब'।

वैह स्वप्न तँ अछि कविता।

प्रयास

एकटाने एकटा आदिम कृपणता
सटल रहलए
तँ कोनोने कोनो सुभ्यस्त आँखिक नेह
सेहो बरसैत रहलए।

जीवनक रंग
बिन कुच्ची
केनवासपर उतारबाक प्रयास
ओहिना नहि छोड़ि देलकए बेमाक।

यातनाशिविरमे क' देल गेलहुँ अछि
स्थानांतरित
कोना राखि सकब एकादशी व्रत ?

संख्या ज्ञानक बाद

संख्या ज्ञानक बाद
पहिने सिखलहुँ जोड़
घटाओ तँ बादमे आएल।

गुणा सिखने होएब पहिने
भाग तँ बादमे गेल होएत सिखाओल।

जीवनक समचा जोड़ैत-जोड़ैत
पहिनुका पहिनहि बिसरा गेल।

लाभे-लाभ दिस देखैत-देखैत
अनका लेल घटाओ आ भागेटा रहि गेल।

पिजरामे एकटा सुग्गा

अवस्से मोनमे रहल होएत
हमरो दरबज्जापर रहैत एकटा सुग्गा
पढ़ैत राम राम
कखनो काल टें टें करैत तँ करैत।

मनोरंजनक मादे
मोन बहटारबाक लोभे
कएने होएब विचार
हमरो दुआरिमे टाँगल रहैत एकटा सुग्गा।

तखने तँ आइ लेने चलि आबि रहल छी
भेल निर्विकार
पिजरामे एकटा सुग्गा।

स्वभाविक छैक

स्वभाविक छैक
हम एमहर झुकाएब
अहाँ ओमहर
कखनो एमहर वा ओमहर झुकिओ जाए।

स्वभाविक छैक
दर्पण हम देखाएब
आ अहूँ
कखनो निरपेक्ष किछु झलकिओ जाए।

संभावनाक बीआ

नहि कोनो बेजाए
जत' पड़ल हो ततहि खोजल जाए
अँकुरा नहि सकल हो कदाचित्
बनि नहि पाओल हो एखन धरि झमटगर गाछ।

खोजि
खोधि
निकालल जाए
जत' जत' सुप्तावस्थामे पड़ल हो
संभावनाक बीआ।

नहि कोनो बेजाए
जत' गड़ल हो
ततहिसँ निकालल जाए
काँट
गड़ल-गड़ल बनि नहि जाए
बजरकाँट।

सत्ते कहैत छी

सत्ते कहैत छी
बदमास नहि बन' चाहैत छी अहाँ लग
अहाँ धरि अहाँक संगे-संग पहुँच' चाहैत छी
अहाँमे अहीं बनि रह' चाहैत छी
उपदेशकक मुखमुद्रा बनबैत-बनबैत
मुँह जेना ने भ' गेलए टेढ़
आब तँ बस्स
'प्रेमक अढ़ाए आखर'
पढ़' चाहैत छी।

गृहस्थी

टेकने रहलहुँ अहाँ गृहस्थी
हम टेकने रहलहुँ पीठ
सुनिओ क' अनठेनाइ
सिखि लेने छी
गबदी लादि
गुड़क सुआद चिखि लेने छी।

जोरोसँ बजलहुँ अहाँ
नहिए पड़ल झर
एत' सँ ओत' तैओ
नहिए कएलहुँ खढ़।

अहाँक बहन्ने

अहाँक बहन्ने कहि लेब किछु
असान नहि रहल कहिओसँ
अपसिआँत भेल तकैत छी तैओ
कोनो ने कोनो बहन्ना।

अहाँक बहन्ने चमकब
तँ किन्हु नीक नहि लागल कहिओ
नीक तँ आर बड्ड किछु नहि लगैए
जेना चुप रहब अहाँक
कहलासँ पहिनहि
दोसरो बेर ल' आनब चाह
खुशामद करबाक अधिकार
हम छोड़' नहि चाहब।

कएक बहन्नाक बीच
बस्स बहन्ना बनेनाइ सीखि लेलहुँ अछि
अहाँ त' पूरा-पूरी ओढ़ि लेलहुँ
हम त' रुमालो बनब बिसरि गेलहुँ।

एखन धरि

मुँहपर चुहचुहा आएल पसेनासँ
तीतल लटकैं सरिअबैत
अहाँक हाथक फिरीसानीसँ
हमर कोनो टा सम्बन्ध होयबाक
कोनो टा संकेत
हमरा लग नहि अछि एखन धरि।

कलम कहत
बिछि-बाछि आनल, जानल आ कि अकानल
ताहि संग भागैत अपन
आ भोगैत अहाँक मोनक
सामंजस्य बैसयबाक
कोनो टा योजना
नहि बनि सकलए एखन धरि।

विडम्बना तकबाक अभ्यासी बनल मोन
परिस्थितिसँ कनछिआइत
रह' चाहैत अछि ओत'
रचबाक हो सुविधा जत'।

समांतर चलैत आकांक्षाक अपूर्णतासँ
उपजल आक्रोशकेँ सम्हारबाक अपन अक्षमताकेँ
नापि लेबाक कोनो टा मीटर
नहिए अछि आइओके तारिखमे
हमरा लग।

तारिखपर तारिख स्थगित रखैत अएलहुँ अछि
अपनाकेँ दोषी सिद्ध क' देबाक निर्णयकेँ।

बिनु घोषित कएनहि कोनो दण्ड
आबि जएतैक ठीक-ठाक सभ किछु पटरीपर
एहन सन कोनो टा दृष्टांत
नहिए भेटल अछि
एखन धरि हमरा।

कने दूरपर

घर सम्हारने अहाँ छी
एहि बीच हम कहाँ छी ?
दूर ?
बहुत दूर ?
नहि, नहि !
कने दूरपर हमहूँ जहाँ-तहाँ छी।

एक-एक बेगरतापर नजरि
एक-एकटा खगतापर धियान
लगौने अहाँ छी
कने दूरपर हमहूँ जहाँ-तहाँ छी।

अनठाएब प्रकृति हमर
कहि, अपने लागि जाएब
स्वभाव अहाँक
एहि तफरकाक बीच हम कहाँ छी ?
कने दूरपर हमहूँ जहाँ-तहाँ छी।

उदात्त आसक बोन
धएने-धएने मोन
बौआएल कोन नहि कोन ?
सभ कोनपर तँ अहाँ छी
कने दूरपर हमहुँ जहाँ-तहाँ छी।

एहि अभयारण्यमे

[मुजफ्फरपुर बालिका गृहकांडसँ संदर्भित]

बना बैसल छी
अपनहिमे अपन-अपन अभयारण्य
आँखि मूनि ताहिमे छी ध्यानमग्न
मुँहपर पसरल अछि
'निश्चिंतम परम सुखम'।

ई अभयारण्य सभ तरहेँ क' देलकए निचेन
आखेट पर तँ सहजहि लागि गेलए
प्रतिबन्ध एतए
ताकि हेरि
अनाथ आर्त, अबोध-असहायकेँ
शरण देलकए
सुचारू रूपेँ संचालित करवा लेल
किछु उत्साही अएलाह आगू
प्रशासन सेहो कतेको नियम बना
करैत रहलए लागू।

तखन किएक रहितैक एतए
विशेष सावधानीक आवश्यकता
अतिरिक्त चौचक रहबाक जरूरति
शाकाहार बनाओल गैलक

एतुक्का वैधानिक खोराक
तँ बाघ-सिंहोक नहि भेलैक
हिंस्र पशुरूपेँ पहिचान
जुटि गेलैक गीदड़-सियार
विलुप्त भेल गिद्ध सभ
बना लेलकैक एतहि बसेरा
तखने तँ कोनो टा निरीह
नहि रहि सकलै सुरक्षित एतए।

कहिआ घुरि अएबए प्रद्युम्न

[रेयान इंटरनेशल स्कूल, गुरूग्रामक 11 वर्षीय छात्र प्रद्युम्न ठाकुरकेँ समर्पित, जकर स्कूल परिसरहिमे हत्या भ' गेल]

कोनो मेला-ठेला कि बजारक कोनो गली
आ कि पार्कसँ
गाएब होइत अबोध बच्चा सभक घटनासँ
जन्म लैत अछि हजारक हजार अंदेसा
यौन-शोषणसँ ल' हाथ-पएर तोड़ि
भीख मँगएबाक कतेको कथा
सुनबामे अबैत अछि यदा-कदा।

सरकारी कि कोनो निजी अस्पतालक
जच्चा-बच्चा वार्डसँ नवजात नेना सभक गाएब होएब
परसौतीक हृदयपर तँ बज्रपाते थिक।
बहुतो दिन धरि आस लगौने रहलाक बाद
मना लैत हेती अपन हृदयकेँ ओ जननी
एहि धरतिएपर कोनो परिवारमे
पोसा रहल होएत हमर लाल
मुदा आँखिमे तँ अहर्निश जगले रहैत हेतनि
एखनो घुरि आबि सकैए नेना हमर।

घुरि आएल रहथिन अपहृत रूक्मिणी पुत्र प्रद्युम्न
मायासुरक कहरसँ बचा लेने रहनि

रति देवी
तखन किएक नहि पिघलि हृदय
बहि जाएत बरसाती धार सन
आइ ओहि माएकैं
जकर अबोध प्रद्युम्नक गरदनिपर अकारणेँ
चलि जाइत छैक छूरी
नहि बूझि पौलक की अपराध छलैक
ओकर नेनाकैं।

के घुरा लाओत आब प्रद्युम्नकैं
कि अपनो अहाँ घुरि आब' चाहब प्रद्युम्न ?
एहि गाम, एहि शहर, एहि देश, एहि धरतीपर
कोन मुँहे कहू प्रद्युम्न !
घुरि आउ !
स्वर्गसँ सुन्दर एहि धराधामपर।

खधिया संग षड्यन्त्रमे

सड़कक बीचो-बीच
भ' आएल खधिया सभक कारणेँ
फेका जाइत अछि मोटरसाइकिल-सवार
गुड़कि जाइत अछि साइकिल चलौनिहार
मुँह भरे खसि पड़ैत अछि रिक्साक सवारी
पएरे चलनिहारक कथे कोन
कते खसि-पड़ि कपड़ा खराप क'
घुरि अएलाह अछि बिच्चहिसँ।

भादबक घटाटोप अन्हरिआ पाबि
त' जेना आरो उन्मत्त भ' गेलए
ई खधिया सभ
लगैए जेना छलए अवसरक ताकमे
आ खसिते ककरो
पसरि जाइत छैक जेना कतेको मुखड़ापर
उपहासात्मक मुसुकी
ओहो सभ त' सामिल मानले जा सकैए
एहि षड्यन्त्रमे।

अनेरो डरएबाक आग्रही प्रशासन
क' सकैत छल पहिनहि सचेत

लगा सकैत छल सूचना-पट्ट
निकालि सकैत छल विज्ञप्ति
'सावधान ! ई सड़क भ' गेलए मारुक
जाउ नहि एहि दऽ'
मुदा ई त' व्यवस्था लेल
अपनहिसँ अपन मुँहपर
'जुत्ता मारि लेब सन' भ' जएतैक
से ना-सकार जाइत रहल सदति
आ छोड़ि देलक हमरा-अहाँकेँ
भागक भरोसे।

भारी बरखासँ लबालब भरल
सड़क परहक कोनो खुलल मेनहोल
तरे-तर बहा ल' जा सकैत अछि
कोनो धार धरि
कोनो नाला तक
जत' निस्पंदित शरीरेटा भेटए
चिन्हबा लेल
कि बरखाक पानिमे अपन जनमारास्वरूप
नुकौने कोना खधिया
अपंग बना
पहुँचा सकैत अछि
अस्पतालक बेडपर।

जान संग खेलौड़ करैत ई खधिया सभ
असबार भ' गेलए माथपर
सिद्धान्ततः 'लेब-देब' अपराध घोषित कएने व्यवस्था

व्यवहारत: जेना नहि ससरैए बिनु लेने-देने एको डेग
तखन 'घूर-धुआँ' कए क' एहि खधियासँ बाहरो आबि
अपराध-बोधसँ ग्रसित तँ रहिए जाएब।

ताहिपर विडम्बना देखू
नहि जानि एहन कते खधिया नजरि अबैए
जे नहि अबैए
से त' आरो बेसी घातक साबित होइए।

कोनो देवासुर संग्रामक नहि बनब साक्षी

कोनो देवासुर संग्रामक
नहि बनब साक्षी
नहि पक्षकार।

पैरोकार तँ किन्नहु नहि
मनुक्खक संघर्षक
बनब अंग अवस्से।

नहि लड़ब
थोपल-थापल कोनोटा युद्ध
नहि सजाएब
ताहि लेल व्यूह।

नहि करब
पूर्व-निर्णित पक्ष-विपक्षक
रंचोमात्र परबाहि
समर्थनक निकष
न्याय-अन्याये टा होएत भाइ।

जनता-फोरम

[जनता-फोरम 'एक' कविता-संग्रह 'कइएक अर्थमे' संकलित अछि]

दू

नहि बदलि सकता हवाक रूखि
नहि उठा सकता सुविधानुसार मुद्‌दा
तय करत सभटा जनता-फोरम
कोन-कोन विषयपर प्रत्याशीलोकनि
करता घमर्थन
रखता अपन विचार
बनेता कार्ययोजना
एहिसँ इतर जँ कोनो मसला उठेता
मानल जाएत आचार-संहिताक उल्लंघन
कएल जएतनि कारवाइ
भ' जएता अयोग्य घोषित।

दर्शक दीर्घामे ठाढ़ ओ के अछि ?

दर्शक दीर्घामे ठाढ़ ओ के अछि ?
भीड़क बीच
बेर-बेर हाथ लहरा
मुट्ठी बान्हि
चिचिआ
करा रहलए विरोध दर्ज
भ' सकैए हमरे सभक बीचसँ किओ हो
मुदा ओ दर्शक दीर्घामे पहुँचल कोना ?
विरोधीपर तँ कड़ा नजरि राखल जा रहल छलैक
सभ आगन्तुकक हुलियाक लेल जा रहल छलैक जाएजा
मुखाकृतिपर विरोधक सूक्ष्म लकीर धरिकैं
पढ़ि लेबाक कएल गेल छलैक पूरा-पूरी इंतजाम
दृष्टिहीन-दर्शकभाव
मूक-श्रोतास्वभाव
यैह तँ निर्धारित छलैक अर्हता।

तखनो नहि जानि कोना पहुँचि गेलै
बुलन्द क' रहलए आवाज
दौड़ि पड़लै सुरक्षा-गार्ड
मुँहपर साटि देबा लेल चिप्पी
बान्हि देबा लेल पाछाँ मुँहे दुनू हाथ
उठा फेकि देबा लेल बाहर।

आबो तँ चिन्हिऔ !
ओ के अछि ?
भ' सकैए
हमही होइ
अहीं होइ
वा आधा-आधा दुनू होइ।

पक्ष-प्रतिपक्ष

रणभूमिओमे नहि खिंचल जा सकल कहिओ
पक्ष-प्रतिपक्षक
स्पष्ट रेघा।
भीष्म केर कोनो बाणपर
नहिए लिखा सकल कहिओ
पाँचो पाण्डुकुमारमे सँ किनको नाम।

शल्यक कटुवचन
जँ अपनहि पक्षक करैत रहल हृदय विदीर्ण
तँ कोन डाँरि
बाँटि सकत स्पष्ट
हमरा-अहाँकेँ
पक्ष-प्रतिपक्षमे ?

विचार केर अनगिनत पात
एकहि जड़िसँ पोषण पाबि
हरिआएल रहलए
आ कतिआइत गेलए करमसह
एकभग्गू उत्पात।

मीतासँ

अपनहुकेँ बकसबाक लेल जँ नहि अछि तैआर
तँ अपसोच संग कहे पड़त मीत !
ल' लेब कोनो छूट
सभ दिनसँ रहलए अधिकार क्षेत्रसँ बाहर।

अपना धरि अबैत-अबैत जँ बेग पड़' लगैए कमजोर
बुझाइए तूणीर खाली
तँ मानहे पड़त मीत !
दोसरे विरूद्ध कोना जारी रहतैक सभदिनुका संग्राम ?
घुमिओ जाइत छैक तोप केर मुँह
कोना बेकछेबै ?
ककरा-ककरापर तानल जएतैक संगीन
एकटा रंगीन दिनक प्रतीक्षामे ?

सिंहवलोकनोसँ जरूरी भ' जाइत छैक
पदचाप अकानब
कोना नहि बाजू मीत ?
सभसँ जरूरी छैक
अपनाकेँ जानब।

एक पृष्ठ उज्जवल जँ फड़फड़ाइत रहलए
तँ दोसरे तर कते अगिआइत रहलए
की ताहिपर कहिओ सोचलियैए मीत ?

औचित्य

कटल आँठा ल' एकलव्य
जारनि तोड़लनि कि बोझ ढोलनि
कि विषादक छाहरिमे बैसि
पश्चातापक आगिमे जरैत
सुखबैत रहला गात ?
कि दिनपर दिन हरिआइत जखम लेने
चुपचाप सुनगैत-पजरैत
बनि गेला इतिहास ?

कानैत तँ अवस्से हेता मोनहु मोन
गुरू-दक्षिणा चुकएबाक संतोषपर
भारी पड़ि जाइत हेतनि
अकारथ भ' गेल पहाड़ सन जीवन
स्वप्न मरि जएबाक पीड़ा
तोड़ि देने हेतनि तरे-तर
लक्ष्यहीन जीवन
छिछिया दैत हेतनि रने-वने।

कोनटामे राखल बीझाएल धनुरेख
आ प्रत्यँचासँ बान्हल
सुखाएल जारनिक गट्ठर देखि
तूणीर भरि जाइत हेतनि अश्रुजलसँ बेर-बेर।

सोचाइत हेतनि अवस्से
कटल आँठा ल' की कएने हेता गुरूदेव ?
बोनहिमे कतहु फेकि देने हेता
चील्ह-कौआ ल' उड़ल हैत
वा ओतहि पड़ल-पड़ल सड़ैत हैत।

किए रहलनि वांछित आचार्य लेल
हमर तुच्छ आँठा
अभ्यासरते तँ छलहुँ
पूर्ण तँ नहि क' पएने रही शिक्षा
ताहिपर ई शीघ्रता ?

गुरू-दक्षिणा चुकएबाक दायित्वपर
सदति भारी पड़ि जाइत हेतनि
माँगि लेबाक औचित्य।

ताहि बीच

बेसी लेल नहि छल अवकाश
नहि खुलल पूरा-पूरी आकाश
आवश्यकते भरि भेल
लेन-देन।

प्रेमक प्रतिमूर्ति
ने अहाँ
ने हम।

होइत रहल कहा-सुन्नी, रूसा-फुल्ली
राग-उपराग सभ।

आवश्यकते भरि कएल भेल
आवश्यकते भरि भेटबो कएल
ताहि बीच
प्रेम।

प्रेम संग

प्रेमगीत गएबाक मोन नहि होइत हो
से नहि
प्रेमे-प्रेम सुझाइत हो सभतरि
सेहो बात नहि
तखन कोन-कोन रूप ध' आओत समक्ष
नहि अछि बूझल
पढ़ाब' चाहैत अछि कोन-कोन पाठ
सेहो नहि सूझल
सूझलमे सूझल एतबे
प्रेमोमे छैके द्वंद्व
प्रेमोमे छैक फंद
देशप्रेम, विश्वप्रेमक विरूद्ध तँ नहि जा रहलए ?
धर्मप्रेम, मानवप्रेमक विरूद्ध तँ नहि योजना बना रहलए ?
भाषा प्रेम ककरो अभिलाषापर तँ नहि क' रहलए कुठराघात ?
हमर प्रेम-विशेष तँ नहि क' रहलए केकरो लेल अवरोध ठाढ़

मानव-सभ्यताक इतिहास
विजयी आ विजितक गाथा कहल जा सकैए
कतेको पुरना घाओकेँ बिसरि
संगे-संग रहल जा सकैए।

कविता-प्रेमी

[स्व. प्रो. सर्वनारायण मिश्रकेँ समर्पित]

एकटा कविता लिखि, सोचलहुँ
सुनाएब पहिने एहन कविता-प्रेमीकेँ
जे अपने नहि लिखने होथि कविता
नजरि घुमौलहुँ परिचित दिस
जे सभ भ' सकैत छलाह सुनबा लेल उत्सुक
लिखितो छलाह
जे नहि लिखैत छलाह
हुनका रूचिओ नहि छलनि
सुनबामे।

नजरि कने उपर उठेलहुँ
शहरक विद्वान प्रोफेसर, बुद्धिजीवी
चिंतक धरि दौड़ेलहुँ
बेसीकेँ नहि रुचि छलनि कवितामे
रुचि छलनि जिनका सभकेँ
कम कि बेसी लिखितो छलाह।

आब आलोचक, समालोचक दिस देखलहुँ
जनैत छलहुँ
ओहो सभ पहिने कविता लिखैत छलाह
हृदयसँ एखनो कविए छथि

जे से नहि छथि
बस्स आलोचक छथि
कविता-प्रेमी तँ किन्नहुँ नहि।

तखन कविता-प्रेमीक
संख्या बढ़एबाक उपाय ई नहि भ' सकैए की ?
बेसीसँ बेसी लोक लिखथि कविता।
कवि बनि
नीक डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्राध्यापक
प्रशासक, किसान, व्यवसायी
सभ किछु तँ बनले जा सकैए
प्रतिष्ठित कवि नहिए बनि पाबथि सभ
प्रतिष्ठित कविता-प्रेमी तँ अवस्से बनि जएताह।

मधुबनीक प्राय: सभ काव्य-बैसारमे शुरूसँ अन्त धरि उपस्थित रहैत छलाह आ अपनाकेँ अनुशासित श्रोता कहैत छलाह।

मन्त्रविद्ध

सहजे नहि होइत छैक मंत्र सिद्ध
सहजे नहि होइत छैक सभ शरसँ क्रौँच विद्ध
से तरकशमे एकहिटा वाण
नहि रखलक कहिओ व्याध।

सिद्ध मांत्रिक बुझैए मर्म
बुझैए क्षुधा आ त्रासक धर्म
चिन्हैए आँखिक निसाँ
स्वप्नपर भ' आरूढ़
बजैत ढ़ोल-तासा मध्य
अवतरित होइए चमत्कारिक ढँगे।

नहि लगैए कतहु किछु यांत्रिक
नहि लगैए कतहु किछु प्रपंच
जगैए आस
दूर होएत आब सभटा संत्रास।

मंत्र सिद्ध कएने मांत्रिक
अपन-अपन राग अलापैए
प्रतिपक्षीकेँ श्रापैए।

देखब वैह, देखाओत जैह
फूसि पचा लेब ओतेक
पिआ देत जतेक
विद्ध छी, विद्ध छी, विद्ध छी
मंत्रविद्ध छी।

देवी विसर्जन

आस्था आ उत्साह घोराएल
एकटा आह्लादकारी बिदाइ-उत्सव
साक्षी होएब वा नहि
निर्भर अछि अपनेपर।

दर्शनार्थी बनि
श्रद्धा निवेदित करी
वा मात्र दर्शक बनि
आनन्द ली।

संगे-संग
नाचू, गाबू
वा भीड़क हिस्सा बनि
ससरैत आगाँ बढ़ि जाउ।

किछु दूर चलि रूकिओ सकैत छी
वा चलैत-चलैत आगाँ जा
दोसरो दिस निकलि सकैत छी।

अमावश्या

अन्हार-गुज छैक
नहि सुझै छैक हाथकेँ हाथ
तखन आइ अमावश्या हेतैक
हँ ! हँ अमावश्ये तँ छैक आइ।

नहि कएल गेल रहैक प्रतीक्षा एकर
आङुरपर नहि गनल गेल रहैक
एकरा लेल एक-एकटा क' दिन
अएलैक तथापि
क्षीण होइत-होइत
पूरा-पूरी अढ भ' गेने चानकेँ
अपनहि आबि गेलैक अमावश्या।

एहि बिनु जँ नहि पूरा होइत हो चक्र
तखन रोकबे व्यर्थ
जन्म-जन्मान्तरक गँठ
ततहु बैसल भेटल ई थथमारि।

हाथकेँ हाथ नहि सुझैए
अकानि लैते छी तखनो आहटिसँ
चलू, एकटा संतोष तँ अछि
अन्हारोमे ताकि सकैत छी अन्हारकेँ।

पहाड़ आ मूस

[स्टिंग ऑपरेशनक मादे]

कलाकार रहए
त' क' देखौलक
उँट कोना लाओल जाइत अछि
पहाड़क नीचाँ।

उँटकेँ ओकर ओकाति देखा देलक
आ अपने पहाड़ बनि बैसल
डर' लागल रहए लोक
नहि जानि
ककरापर नजरि टेढ़ क' देत
आ दिन वक्र करा देत।

पहाड़, पहाड़ होइए
लोक मान' लागल
घाटाकेँ सओदा होएत पहाड़सँ टकराएब
सभ जान' लागल।

भने डरैत हो लोक
अडिग विश्वास रहैक तखनो
पहाड़ अविचल रहत
अपन ठामपर अटल रहत

इन्द्रक कोपसँ बचा लेत
अन्हड़ तककेँ पचा लेत।

अन्हड़सँ उखड़ि
गाछकेँ खसैत त' सभ देखने रहए
मुदा बिनु भूकंपे
पहाड़ो, उखड़ि धरतीमे धंसैए
से त' नहि रहए किओ देखने।

नहि ! नहि ! ई कथा
कागजपर पारल कोनो पहाड़
आ मूसक बुझाइए
जे पहाड़केँ कुतरि खाइए
आ पहाड़ोसँ पैघ कहाइए।

एक बेर पूछि तँ लिऔ

निर्णय लेब' सँ पहिने
एक बेर पूछि त' लिऔ।

ओ त' रहती
संतानक पक्षमे
पतिक पक्षमे
पिताक पक्षमे
भाइक पक्षमे
संसारक पक्षमे
धरतीक पक्षमे।

तैओ एक बेर पूछि तँ लियौ !
यौ ! न्यायक पक्षमे
मनुष्यत्त्वक पक्षमे
शांतिक पक्षमे
सभसँ आगाँ भेटतीह ओ ठाढ़।

बेर-बेर पूछिऔ तैओ।

डराओन एकटा प्रेत

ढोलहो पिटा देल जाए
मुनादी करा देल जाए
शहरक बीच उगि अएलए बोन
मनाही छैक एकसरे निकलब कोनो चिड़ैकेँ
घुसि आएल छैक बहुतो बनैला
लगौने रहैत छैक घात
चहकबापर लागल छैक रोक
देखलक जखने एकसरे कोनो चिड़ैकेँ
फेकलक कमंद
फँसौलक फन्द।

बुलंदी इमारतेटाक नहि बढ़लए एहि शहरमे
हैवानियतक सेहो बढ़ि गेलए
गाछ-बिरिछे बाओन नहि भेलए एतए
मनुखताइ सेहो भ' गेलए
सहमल-सहमल लगैए छौना सभ
कोलाहल छैक
रफतार छैक
ताहि बीच्चे डराओन एकटा प्रेत
सभक पीठपर सवार छैक।

मुक्ति-कामना

धरिते विचार-प्रवाह
कठिन होइत गेलैक जनतंत्रक मुक्तिकामना
पिजबिते 'वादी' तरूआरि
मोसकिल होइत गेलैक 'गण' केर मुक्ति-याचना
धरिते 'धारा'क रासि
सिखि लेलकैक 'जन'कैँ हाँकब
दैते 'जन-यज्ञ'मे आहुति
बूझि गेलैक 'जनकांक्षा'कैँ हौंकब।

जन-गण केर रक्षा लेल
खूनक धार बहेबाक होइत अछि घोषणा
आ तरे-तर पोसाइत अछि
महत्त्वाकांक्षा प्रतिपूर्तिक सतरंगी योजना।

समयक देबालपर

लकड़हारा लकड़ी कटैत
गढ़त जँ कविता
त कुड़हरिक चोट संग
धँसैत जाएत कविताक एक-एकटा शब्द काठमे
जरत जखन ओ जारनि
पिघलि-पिघलि निकलत कविता।

कबीरदास करघा चलबैत
बाँचैत रहला कविता
घर्-घर् ध्वनि संग
ताना-भरनीक सूत-सूतमे
अंतरनिहित होइत गेल कबीर-बानि
ओढ़िऔ-ओछबिऔ ओ चद्दरि
बतिएता कबीरदास अहाँक संग।

पनही बनबैत
हाथक बाँटल सूत संग
हृदयक आर-पार होइत रहल रैदासक पाँति
चरर्-मरर् ध्वनि संग एखनो
निकलि अबैए रैदास-बानि
झहरि उठैए मोनमे
चानन सुवासित पानि।

लोहारक भाथी जकाँ मुदा
फुफकारि उठैए आजुक कविता
चोट संग बनि जाइए
चक्कू, कटार, खुरपी, कोदारि
हाँसू, हथौड़ा
करबा लेल चोट
काट' लेल झाड़-झँखाड़।

समयक देबालपर
गड़ल किछु कील
किन्हु नहि निकलत
देखि लिऔक हिला-डोला
हँ, टँगा सकैए एखनो ओहिपर
पैघटा किनको फोटो।

अंतिम चरणक चुनावसँ पहिने

अंतिम चरणक चुनावसँ पहिनहि
भ' गेलैक जनतंत्रक चीरहरण
रचाओल गेल लाक्षागृहमे
जरि गेलैक जनाकांक्षी लोकतंत्रक पंच-पुतरा
खण्डित जन-आस्थाक प्रतिमाक
पुनर्निमाणक राजनीतिक संग
टूटि गेलैक भीष्म-प्रतिज्ञा
पार्थक गाण्डिव बोकरि देलकैक अग्नि-बाण !
भीमक रक्त-पिपासु गदा
पीबि लेलकैक आँजुरे-आँजुर
शत्रुक हृदयक उष्ण-रक्त
धपाएल व्याध
लगौने-लगौने घात
साधि निसान
क' देलकैक जनतांत्रिक महापर्वक मूल्यकेँ ध्वस्त
मुदा पोसाएले रहलै अभिलाषा
सहस्त्रो आन्हर धृतराष्ट्रक करेजमे
टोबबाक प्रतिपक्षीक मृत-मुखमंडलकेँ।

प्रेम आ विद्रोह

प्रेम जा अँखुआइए
ता विद्रोह कुलबुला उठैए
प्रेम डेगाडेगी दैए
ताबत विद्रोहक झुनझुनीसँ देह झनझना गेल रहैए
प्रेमक अनुभूतिसँ रोइयाँ भुलकैए
ताधरि विद्रोहक आवेगसँ शिरा तनतना जाइए।

की विद्रोह कहिओ प्रेमक दोसर नाम भ' सकैए ?
की प्रेम अपनोसँ विद्रोह क' सकैए ?
की कहिओ दुनू एकहि सिक्काक दूटा पृष्ठ साबित होएत ?
की विद्रोहो कहिओ प्रेमक ज्योतिसँ उद्‌भासित होएत ?

घृणासँ जन्मल विद्रोह
बाँटैत रहल सभ दिन संत्रासक बएन
बरसि पड़ैए अनायासे
तैओ तिमिराछन्न मेघ नहि छँटैए।

प्रेमसँ उपजल विद्रोह
काटि सकत सभटा ससरफानी।

राम-राज्य

जहिआ सभक मुहथरि धरि
जच्चा-बच्चाकेँ सलामति
पहुँचा जएतैक एम्बुलेंस
तहिआ कहि सकतै किओ
नहि अएलै रामराज्य ?

पढ़ि-लिखि
योग्यतानुसार
पाबि सकै स्थान सभ
आर केहन हेतैक राम राज्य ?

सभकेँ भेटौक न्याय
एहिसँ इतर
ककरा चाही आर केहन राम राज्य ?

गुणग्राहिनी

बनि जाएब जहिए पूरा-पूरी गुणग्राहिनी
टुटि जाएत सभटा बन्हेज
जुटि जाएत सभटा टुटल ताग।

गुणग्राहकता त' रहलए सभदिना
तैओ भ' क्लांत
पशुक आक्रामकतासँ पएबा हेतु विश्रांति
शरणागत भेलहुँ
घुमि गेल रहए
पाछाँ मुँहे सूइ तहिए।

नजरि नहि अबैए कतहु किछु आर
मोड़ि सकए जे धार
तोड़ि सकए सभटा अंधकारा
एहि छोरसँ ओहि छोर धरि।

जोड़ी

जोड़ी बनाएब
आजुक साकांक्ष नवतुरिआक
मानल जा सकैए कसौटी
कते की आबएबला जुगकेँ अकानैए
कि तनले तानकेँ तानैए।

पारिवारिक नियम छै, कायदा छैक
मुदा ताहि संग अपन मर्जीक महत्त्व
सेहो आइ जादा छैक।

कते के युगधर्मकेँ अकानैए
कि तनले तानकेँ फेरसँ तानैए।

बोझ

नहि ढोअब बोझ
हमरो करबाक अछि
पीठ अपन सोझ।

अकड़ि गेलए गरदनि
थरथराइत रहलए जाँघ दुनू
एहन हृदयशून्यतापर उठि रहलए क्रोध।

ढोउ कते तथाकथित पूर्वाग्रह
लदमलद्द रहलए जखन
एकपर एक दुराग्रह
एम्हर उद्वेलित कएने रहलए
नव-नव सोच।

विकट सन बाट
ताहिपर लगा देल गेलए काँट
मोन भ' गेल आँट
हम त' तकैत रहलहुँ सभ दिन
रस्ता सोझे-सोझ।

अजुका तारिखमे

रहए कएकटा व्याख्या
आब एकटा परिभाषा अछि
रहए कएकटा रूप
आब एकटा अप्रतिम टेक अछि
सत्यान्वेषणक रहए कएकटा मार्ग
आब एकटा धुजा अछि।

किछु स्वप्न विषाक्त भेल रहलए
सदतिसँ
तकरा साकार करबाक
अंध-आस्था अछि
अजुका तारिखमे।

पहाड़ : एकटा संभावना

पहाड़
एकटा अवरोध
एकटा विरोध

एकटा स्थापित प्रतिपक्षी
जन्मजात विपक्षी

तखने तँ एकटा संभावना अछि
पहाड़ एखनो।

एहि बीचमे

एहि बीचमे
निर्विवाद ने अहाँक स्थिति मीत
ने हमर
ओना टिकले छी अपन-अपन सत्यपर
आ सत्य कही तँ अपन-अपन जिदपर।

ई अपन-अपन सत्य
अपन-अपन टेक अछि
कि बीचमे पारल रेघ अछि ?

कहैत रहलियै

प्रेम लेल की की त्याग करबै ?
आउ ने मीत !
बैसि बनाबी एक-एकटा फिरिस्त
करी मिलान
सोची तखन कने काल
प्रेम लेल की त्याग करबै हम ?
की अहाँ ?

अहाँ अपनाकेँ ठीक
हम अपनाकेँ नीक
कहैत रहलियै।

संगे-संग

आजुक सुरुज किछु भिन्न लागल
उगल रहथि काल्हिओ
नहि जागि सकल रही संगे-संग
निश्चित नहि भ' सकल रहए किछु विशेष।

जनलहुँ वैश्विकता
बुझबामे आएल
संगे-संग जागि जएबाक महत्ता।

जिच

जिच कोनो कनेक टा नहि
उन्नीस के
आ के बीस
बनले अछि जिच।

बनल छी ठामपर
तनल छी कुठामपर।

जीबैए हमरामे हमर अतीत
पचाससँ ल' अस्सी प्रतिशत धरि
हुलकी दैए भविष्य
बिजुलोका सन
कखनो काल।

अहंमन्यता

प्रेमक पाठ पढ़ैत-पढ़ैत
पढ़' लगलहुँ अति-प्रेमक पाठ
प्रेमगीत गबैत-गबैत
गाब' लगलहुँ अतीत-प्रेमक गीत
सत्यकेँ चिन्हैत-चिन्हैत
चिन्ह' लगलहुँ सत्यासत्यकेँ।

समुन्नत होयबाक समानान्तर
चलैत रहलए अहंमन्यता।

यथार्थक करुआरि धएने

आउ भाइ ! स्वागत अछि
प्रतिभाक
महत्त्वकांक्षाक सेहो स्वागत अछि
भेटि सकैए एतहु
सफलताक सुआद।

अलग साबित करबाक
छैक अवसर एतहु
अबिऔ
स्वप्न लेने
यथार्थक करुआरि धएने।

नाम आपस लैत

कठिन रहल कहिओसँ निष्पक्ष रहब
ओतबे कठिन किन्तु-परन्तु बिनु
पक्ष कि विपक्षमे ठाढ़ भ' जाएब
न्याय-अन्यायक रेघ
लगैत अछि कते भ्रामक ?
कते असंगत ?

हारि आ कि जीत
जीवन संग विसंगति, राग-द्वेष, आमर्ष
हर्ष-विषाद, अवनति आ उत्कर्ष
सहजता-असहजता
सभ किछु तँ अपनहि अरजल अछि।

किंचित मात्र पराजय बोध नहि
नहि च्युत होएबाक डर
नहि अछूत भ' जएबाक भय
मोह-व्यामोह किछु नहि
नहि तर्क-वितर्क
नहि विवर्त
एहन सन कोनो बात मोनमे नहि मीत !
नाम आपस लैत।

निरस्त करैत अपनाकेँ

निरस्त क' लेब अपनाकेँ
कम यंत्रणादायक नहि
तँ फलदायको कम नहि मीत !
आउ ! निरस्त क' ली
अपना-अपनीकेँ।

पहाड़ घोराइए
बात-व्यवहार सेहो घुलि-मिलि जाइए
आउ मीत ! घोरि ली एक-दोसरामे अपनाकेँ।

आर पैघ अभियान लेल
उतरहि टा पड़त नीच्चा
तखनहि शुरू कएल जा सकतै
सागरमाथाक अभियान।

आउ मीत ! समर्पित क' ली अपना-अपनीकेँ
'गणदेवता'क चरण-चिन्हपर।

जीवन-राग

आमजनकेँ पीड़ासँ द्रवित सिद्धार्थ
तथागत बनबाक मार्गपर बढला
देखलनि पिताक राजमहल दिस एक बेर
उत्तर दिशामे हिमालय-उपत्यकाक
कोनो एकांत कंदरामे आत्मलीन होएबाक कल्पना
कएने रहथि पहिने कतेको बेर
महाभिनिष्क्रमण काल मुदा
डेग अनायासे बढ़ि गेलनि दक्षिण दिस
जेमहर छलैक अपार जनसमूहक
अनेकानेक मत-अभिमतक संजाल
कतेको पंथक पसरल मकड़जाल
पाखण्डमग्न कतेको साम्प्रदायिक महाल।

ज्ञान-प्रत्याशामे बौआइत सिद्धार्थ
पहुँचला निरंजनाक कछेरपर
ग्राम्यबालाक सुमधुर तानमे
भेटि गेलनि जीवन-राग
सुजाताक खीरमे पौलनि
अनुपम अनुराग।

परिस्थिति

उठलैक बिर्रो
उड़िअएलैक बहुतो किछु
मुदा तकर दोख
ने हवाकेँ माथ मढ़ल जा सकैए
ने बिर्रोकेँ कपारपर
दोख तँ हमरे अहाँक ने मीत !
हमही-अहाँ ने बनौलियैक ओ स्थिति
जाहि कारणेँ गरम भेलैक हवा
उठलैक बिर्रो।

अहाँ मढ़बै हमरापर
हम अहाँपर
कतहु ने कतहु ठाढ़ छियैक दुनू
एहि ने ओहि पार
बिर्रो उठएबाक बनबैत परिस्थिति।

ठाढ़

ठाढ़ रह' बला सत्ते
रहि जाइत अछि ठाढ़े
तखन रहिते किएक अछि ठाढ़ ?
मुदा रहौ कोना नहि ठाढ़ ?
अपनहि बीचमेसँ किओ रहि गेल हो पाछाँ
तँ कोना नहि रहौक ठाढ़ ?
मुदा दोसराक कान्हपर लातो ध'
भेटैत हो आगाँ बढ़ि जएबाक अवसर
तँ कतेक रहि पबैत अछि ठाढ़ ?
ओना नहि होएबाक चाही एकर कोनो गिनती
कि मीन-मेष निकालबाक कोनो बेगरता
के ककरा लतखुरदनि करैत निकलि गेल आगाँ
आ के ककर प्रतिक्षा करैत
रहि गेल ठाढ़ ?

सड़क-संवेद

एक

बच्चा अछि तँ दौड़बे करत
सड़क हो कि अङनै
नहि दौड़बाक चाही सड़कपर
बुझैत-बुझैत भ' गेलए सेआन
आब तँ हॉर्न सुनिओ क'
नहि दैए कान।

दू

सद्यः बरसि
डबकि गेलए
सड़केपर पानि
छिटका उड़बैत आ-जा रहलए
कतेको मोटरसाइकिल
पएरे चलनिहार बेसी चौचक
तौलि रहलए नजरिए-नजरि
के उड़ा रहलए बेसी
के कम।

तीन

जाम ! जाम ! जाम !
अनचिन्हार ! अनचिन्हार !
परस्पर आगाँ बढ़ि जएबाक प्रयास होशियार
बदलि गेलए एखने
कहासुनी मे।

चारि

अड्डा रोपि भ' गेल अछि ठाढ़
बिचहि सड़कपर
नहि जाउ आधुनिक बगए-बानिपर
बरू दोसर दिससँ कतेको गाड़ी क' जाउ पास
जाबत पाछाँसँ आबि
कोनो भ' नहि जएतैक पार
किन्नहु नहि बढ़ि सकै छथि आगू
एखने जे बिलाइ कएने छलैक सड़क पार।

पाँच

बकरी निकालैए बाघक आवाज
घोड़ा जकाँ हिनहिनाइत
हाथी जकाँ चिंघाड़ैत
बगलसँ कोनो चारिचकिया निकलि जाएत
अद्‌भुत अछि आइ-काल्हि
सड़कपर आवाज निकालबाक
भ' आएल जनतंत्रीकरण।

छओ

जान त' अपन अछि
तकर कोन डर ?
डर त' पुलिसक
कतेक की ऐंठत
तखने तँ लटका क' राखि लेने छी
गाड़ीमे हेलमेट।

सात

लहरिदार कहरसँ
घायल भेल शहर
क्रूर अतिक्रमसँ
समयो गेल क्षणभरि ठहरि
चिचिआ उठल दसो दिशा
करेज हाथमे ल'
ठमकि गेल हवा
नोर आँखिमे द'।

बीच सड़कपर ठेला

बीच सड़कपर पाँच हाथकेँ
लोक एकटा अलबेला
ठेलि रहल अछि ठेला
तखने हुच्ची कएलक खेला
अटकि गेल अछि ठेला
ठमकि गेल अछि ठेला।

सौंसे देह घामसँ भीजलै
पूरा सड़क जाम भ' गेलै
ठेलि रहल अछि जोर लगा क'—
हइसा
एहि कोनसँ
ओहि कोनसँ—
हइसा
टसमस नहि भ' रहलै तैओ
लदमलद्द ई ठेला।

हुच्चीमे छै फँसल
खाधियामे छै धँसल
जोर लगा लगा भ' गेल अपसिआँत
आब त' उठए नहि पएर
बन्हा गेल हो जेना जाँत।

कसि क' जोर लगौलक पुनि एक बेर—
हइसा
निकलि गेल ठेला
आगाँ बढ़ि गेल ल' ठेला।

भाइ ! सावधान !

भाइ ! सावधान !
एतए पसरि रहलए तनाओ
भाइ ! सावधान !
एतएसँ ससरि रहलए सद्‌भाव।

तनातनीक कोनो कारण हो
सेहो नहि जरूरी
वाजिब कोनो बात हो
तकरो नहि मजबूरी।

अहाँ एहि द' नहि
ओहि द' चलि जाउ !
यौ ! अहाँ ओहि द' नहि
कात द' एम्हरेसँ निकलि जाउ !

भाइ ! सावधान !
एहि चौबटियापर तँ
एको क्षण नहि विलमू
भाइ ! सावधान !
एत' ओत तँ भूलिओ क'
नहि घुमू।

हाँ ! हाँ ! हाँ ! ई पहिरि
एम्हर द' तँ किन्हु नहि जाउ
हे ! हे ! हे ! ई बगए-बानि ल'
घुरिए टा जाउ !

अहाँक काज-धाज
अनेरो देतैक ककरो उसका
अहाँक जीविका
दोसरा लेल भ' सकैए बिखाह।

भाइ ! सावधान !
एतए पसरि रहलए तनाओ
भाइ ! सावधान !
एतएसँ ससरि रहलए सद्भाव।

रंग

वर्तमानमे अतीतक छाह-छूह देखै छी
ताहिमे अपन-अपन रंग तकै छी
नहि पाबि अपन रंगक आभास
भ' जाइत छी आशंकित
नहि जानि कोन रंगमे रंगाएब
आ कि बिनु रंगेने चढ़ल रहल
कोनो ने कोनो रंग।

एहि आपत्कालमे

एक

शहर आइ निसभेर भेल अछि
बिनु कमऐने नहि रह' देलक
नहि बरदास्त क' सकल बिनु उपयोगिताक
नहि पालि सकल कैंचा सठने एको दिन
बाल-बच्चा संगे
मोटा-चोटा लदने
दस, बीस, पचीस, पचास नहि
हजार, दू हजार किलोमीटर
पएरे नापि लेबाक दुस्साहस लेने
घुरि रहल छी
एहि आपत्कालमे।

जाहि महानगरक जिनगी पटरीपर नहि दौड़ैत छलैक
हमरा सभक बिनु
तकरे लेल भ' गेल छी आइ अवांछित
आतुर अछि आइ
दूध मेका माछी जकाँ निकालि फेकि देबा लेल
रूकितहुँ त' कोन बलपर
नहि रहल रोजी-रोटीक साधन

सठि गेल अछि राशन
खाली भ' गेल बैंक खाता
परेशान कएने रहल पेटक ज्वाला
लौहछौने छल खोलीक किराया
धकिया रहल छलै स्थानीय तंत्र
आ अहाँ रटबैत रहलहुँ
घरे रहू ! घरे रहू ! घरे रहूके मंत्र।

मानि लेल गेल एकरा एकटा सामुदायिक विपत्ति
मुदा तकर कोना होइत छैक अलग-अलग अर्थ
पड़ैत छैक भिन्न-भिन्न प्रभाव
नहि तकरा अनुमानि सकलहुँ
ने हाथ बढ़ा हमरा धरि आनि सकलहुँ
आब भ' गेल होएत भान
कते असंगत अछि।
सामाजिक सुरक्षा कवचक तानल वितान।

अहाँक कहलमे रहल ट्रेन
अहाँक वशमे रहल बस
मुदा कोना मानैत ई पएर
जे भोगि रहल एतेक क्लेशे-क्लेश
जँ नहि रहैत बहुत बेसी दिक्कत
तँ की पएरे भ' जएतहुँ विदा ?
पेटमे खढ़ रहैत
तखन ने कान सुनैत अहाँक हिदायत
गुनैत अहाँक उपदेश
अछि आस
एहि बेर जीवैत पहुँचि गेलहुँ जँ गाम

त' माटिओ कोड़ि बचा लेब प्राण
एत' रहब त' अबस्से मारल जाएब
कोरोना मारए
कि मारए भूख।

दू

एम्हरो गामक कर्त्ता-धर्त्ता
समधानल लाठी लेने ठाढ़ छथि
सोझामे हमरे कपार छनि।

ओ गामक नीति-नियंता छथि
मुदा हमरा सभ लेल त' साक्षात् वायरस हन्ता छथि
वायरस-वुहानीसँ आशंकित छथि
मुदा ताहूसँ बेसी हमरेसँ आतंकित छथि।

अपनहि ठामपर लाँछन लगा
धकिआओल जा रहल छी
गामक सिमानपर आबि ठाढ़ छी
काछि कोना कतिआ देब
एहि गामक जनमल हमहु
नहि कोनो बहरिआ बाढ़ि छी।

हमहु रहब एतहि

मानव भाइ!
बनबैत छह जखन तोँ
घर, मकान
अपार्टमेंट, दोकान
फैक्ट्री आ प्लेटफॉर्म
रखिह कने ध्यान
हमहु रहब एतहि।

बाध-बोन कीटनाशीसँ भ' गेलए विषाक्त
नहि मर' चाहै छी चटपट
रह' चाहै छी एहि धरतीपर
बचएबाक अछि हमरो अपन प्राण
अपन नसल अपन जाति-प्रजाति
से रखिह कने ध्यान
हमहु रहब एतहि।

मानव भाइ!
बनाब' बिल्डिंग
प्लेटफॉर्म, कल-कारखाना एहि तरहेँ
की हमहु सभ खोँता बना रहि सकी
नहि हेत' कोनो अतिरिक्त खर्च

लगाब' गाछ-बिरिछ
बैसि तकर ठारि
चहचहाइत
करब तोहर चर्च।

मानव भाइ !
सभ चौबटियापर जे लगौने जा रहल छह
महापुरूष सभक आदमकद प्रतिमा
भरिसके दैत हेथुन प्रेरणा
लगा देने रहितहक जँ गाछ
ताहिपर हमहु रहि जएतहुँ
तोरो भेटितह शुद्ध बसात।

दहक कने ध्यान
हमहु रहब एतहि।

माए पछुआएलोकैँ अगुआ दैत अछि

नीति नहि
ममता कहबै
विशेष प्रीति नहि
समता कहबै
माए, जखन पछुआएलोकैँ अगुआ दैत अछि।

सभकैँ चलनाइ सिखिबैत अछि माए
सभकैँ दौड़नाइ सिखबैत अछि माए
किछु अगुअएलैक
संगे-संग गेलैक
मुदा किओ जँ पछुएलैक
तखन पछे मुँहे घूमि
पछे दिस चलि देलकै माए
देखिऔ !—
तखन कोना
पछुआएलेकैँ अगुआ देलकै माए।

❁ ❁ ❁